



शैखे तरीकत अमीरे अहले सुन्नत हजरत अल्लामा मौलाना अबू बिलाल
मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरी रज़वी رحمۃ اللہ علیہ

खुदकुशी

का इलाज

स्तियाला: 73

पेशकश: शहजादए अत्तार हाजी अहमद उब्बैद रज़ा अत्तारी رحمۃ اللہ علیہ

ये रूज़नारी

एहसासे कमठरी

घरेलू झगडे

किल आवासियां

गुर्बत



खुदकुशी के आ'दादो शुमार

क्या खुदकुशी से जान डूट जाती है?

सब्र कर ने का तरीका

16 कलिमाते कुफ़्र

सांस की वरज़िश

पैदल चलने के फ़वाइद

इश्क़े मजाज़ी का इलाज

क़र्ज़ उतारने की दुआ

मक़तब-खतुल मदीना

सिल्लेकटेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दस्वाज़ा आज़मदआबाद-1. गुजरात, इन्डिया

Ph:91-79- 25391168 E:mail: maktabehind@hotmail.com

www.dawateislami.net

“खुदकुशी का इलाज”

येह बयान खुदकुशी का इलाज शैखे तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानीए दा'वते इस्लामी हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरि** रज़वी ज़ियाई برکاتہم العالیہ का है, जिसे मजलिसे मक्तबतुल मदीना ने उर्दू में शाएअ़ फ़रमाया है। मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस बयान को हिन्दी रस्मुल ख़त में मक्त-बतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है। www.dawateislami.net

इस में अगर किसी जगह कमीबेशी पाए तो मजलिसे तराजिम को मुत्तलअ़ फ़रमा कर स़वाब कमाइये।

राबिता:- मजलिसे तराजिम
(दा'वते इस्लामी)

मक्त-बतुल मदीना[®]

अहमदआबाद। फ़ोन: 0091-79-2539 11 68

Email : maktabahind@gmail.com

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	4	नेकियों की रीस करो	18
ज़बरदस्त जंगजू	4	कौन किस की तरफ़ देखे ?	18
उस जंगजू के दोज़ख़ी होने के दो ² अस्बाब	5	सब्र करने का तरीक़ा	19
क़बूलिय्यत का दारोमदार ख़ातिमे पर है	5	अगर यूं करता तो यूं होता !	19
जन्नत हराम हो गई	5	ऐसा क्यूं हुवा ?	20
खुदकुशी का मा'ना	6	इन्तिहाई नाजुक मुआमला	20
खुदकुशी के आ'दाद व शुमार	7	कलिमाते कुफ़्र की 16 मिसालें	20
खुदकुशी के बा'ज अस्बाब	7	ग़म सहने का ज़ेहन बना लीजिये	22
खुदकुशी की पांच दर्दनाक वारिदातें	7	क्या हाल है ?	23
ख़बरों से नाम निकाल देने की हिक़मत	8	जोशीला मुबल्लिग़	24
हर दो ² मिनट में खुदकुशी की तीन ³ वारिदातें !	8	आह ! बेचारे मालदार !!	25
क्या खुदकुशी से जान छूट जाती है ?	9	खुदकुशी का एक सबब इश्क़े मजाज़ी	25
आग में अज़ाब	9	खुदकुशी का एक सबब बे रूज़ग़ारी	26
आग के हथियार से अज़ाब	9	सब की रोज़ी अल्लाह ﷻ के जिम्माए क़स्म पर है	26
गला घूटने का अज़ाब	9	परिन्दों की रोज़ी की मिसाल	26
ज़ख़्म व ज़हर के ज़रीए अज़ाब	9	खुदकुशी का एक सबब घरेलू शकर रन्जियां	27
खुदकुशी को जाइज़ समझना कुफ़्र है	10	कुफ़्रार की जहन्नम में छलांग	28
दाइमी अज़ाब की सूरतें	10	खुदकुशी का अहम्म सबब मायूसी	28
सेकन्ड के करोडवें हिस्से का अज़ाब	11	वुजू और रोज़े के हैरत अंगेज़ फ़वाइद	28
मो'मिन का क़ैदख़ाना	11	इमामा बांधना मायूसी का इलाज है	29
अल्लाह ﷻ आजमाता है	11	इमामा और साइन्स	29
बे सब्री से मुसीबत दूर नहीं होती	12	सांस की वर्जिश	29
मुसीबत से बड़ी मुसीबत	12	परेशानी की तरफ़ से तवज्जोह हटा दीजिये	30
तीन सौ ³⁰⁰ द-रजात की बुलन्दी	13	सब्ज़ गुम्बद के तसव्वुर का तरीक़ा	30
ज़ख़्मी हो कर हंस पड़ना	13	येह रहा सब्ज़ गुम्बद !	30
काश मैं मुसीबत ज़दा होता !	13	पैदल चलने के फ़वाइद	31
रौशन क़र्बें	14	बीमार बादशाह	32
जन्नत तकलीफ़ों में ढांपी हुई है	14	शैतान के वस्वसों का रद्द कीजिये	32
म-दनी काफ़िले में ज़ियादा स़वाब कब मिलेगा ?	15	7 रूहानी इलाज	33
गुनाहों के सबब भी मुसीबत आती है	15	(1) ग़म का इलाज	33
तकलीफ़ में गुनाहों का कफ़्रार भी है	16	(2) रोज़ी में ब-र-कत का बेहतरीन नुस्खा	33
मैं ने तो किसी को नुक़सान नहीं पहुंचाया !	16	(3) घरेलू इत्तिफ़ाक़ का अमल	34
आग के बदले ख़ाक	16	(4) दुश्वारी के बा'द आसानी	34
सब्र करने का तरीक़ा	17	(5) इश्क़े मजाज़ी से छुटकारे का अमल	35
तकलीफ़ ज़ियादा तो स़वाब भी ज़ियादा	17	(6) क़र्ज़ा उतारने का वज़ीफ़ा	36
अपने से बड़े मुसीबत ज़दा को देखो	18	(7) बराए रिज़क़ और अदाए क़र्ज़	36

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
 أَمَا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

खुदकुशी का इलाज¹

शायद नफ़्स रुकावट डाले मगर आप येह रिसाला
 पूरा पढ़ कर अपनी आखिरत का भला कीजिये ।

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

हज़रते उबय्यिब्ने कअूब رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने अर्ज़ किया कि (फ़राइज़ वगैरा के इलावा) मैं अपना सारा वक़्त दुरूद ख़्वानी में सर्फ़ करूंगा । तो सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया, “येह तुम्हारी फ़िक्रों को दूर करने के लिये काफ़ी और तुम्हारे गुनाहों के लिये कफ़ारा हो जाएगा ।”

(तिरमिज़ी, जिल्द:4, स-फ़हा:207, रक़मुल हदीस:2465, मत्बूआ दारुल फ़िक्र)

صَلُّوا عَلَيَّ الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدًا

लाएंगे मेरी क़ब्र में तशरीफ़ मुस्तफ़ा ﷺ आदत बना रहा हूँ दुरूदो सलाम की

ज़बरदस्त जंगजू

हज़रते सय्यिदुना अबू हरैरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं, रसूले सक़लैन, सुल्ताने कोनैन, रहमते दारैन, ग़मज़दों के दिलों के चैन, नानाए ह-सनैन صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के साथ हम (ग़ज़्वए) हुनैन हाज़िर हुए, तो अल्लाह के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़ज़हुन अनिल उयूब عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने एक शख़्स जिसे मुसल्मान बताया जाता था उस के बारे में फ़रमाया कि येह दोज़ख़ी है । फिर जब हम क़िताल (या'नी लड़ने) में मशगूल हुए तो वोह शख़्स बहुत शिद्दत से लड़ा और उसे एक ज़ख़म लग गया । किसी ने अर्ज़ की, या रसूलल्लाह ! عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ जिस के बारे में आप ने कुछ देर पहले फ़रमाया था कि वोह दोज़ख़ी है उस ने आज शदीद क़िताल किया और मर गया । तो नबिय्ये अकरम, **रसूले मोह़तशम**, शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया, वोह जहन्नम में गया । क़रीब था कि बा'ज़ मुसल्मान (हैरत में) पड़ जाते कि दर्री अस्ना (या'नी इतने में) किसी ने कहा, वोह मरा नहीं था बल्कि उसे शदीद ज़ख़म लगा था और जब रात हुई तो उस ने उस ज़ख़म की तकलीफ़ पर सब्र न किया और **खुदकुशी** कर ली । चुनान्चे हादीए राहे नजात, सरवरे काइनात, शाहे मौजूदात صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को इस बात की ख़बर दी गई तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया, **اللَّهُ أَكْبَرُ عَزَّوَجَلَّ !** “मैं गवाही देता हूँ कि मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का बन्दा और उस का रसूल हूँ ।” फिर आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने हज़रते बिलाल رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ को हुक्म फ़रमाया तो हज़रते बिलाल رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने लोगों में ए'लान फ़रमा

1. येह बयान अमीरे अहले सुन्नत (دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ) ने तब्तीगे कुरआनो सुन्नत की अ़लमगीर ग़ैर सियासी तहरीक, **दा'वते इस्लामी** के तीन रोज़ा बैनल अक्वामी इज्तिमाअ (9,10,11 शा'बानुल मुअज़्ज़म सिने 1425 हिजरी मदीनतुल औलिया मुल्तान) में शबे इतवार फ़रमाया । ज़रूरी तरमीम के साथ तहरीरन हाज़िरे ख़िदमत है । उ़बैद रज़ा इब्ने अ़त्तार

दिया कि “जन्नत में सिर्फ़ मुसलमान दाख़िल होगा और (बेशक) अल्लाह तआला इस दीन की ताईद किसी फ़ाजिर आदमी से (भी) करवा देता है।”

(सहीह मुस्लिम शरीफ़, रक़मुल हदीस:111, जिल्द:1, स-फ़हा:102, दारुल कुतुबुल इल्मिया, बैरूत, बुख़ारी शरीफ़ 3062)

उस जंगजू के दोख़ी होने के दो² अस्बाब

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़ज़हुन अनिल उयूब عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने कुफ़ार के साथ निहायत बे जिगरी के साथ लड़ने वाले ज़बरदस्त जंगजू को जो जहन्नमी करार दिया उस का एक ज़ाहिरी सबब खुदकुशी और दूसरा बातिनी सबब मुनाफ़िक़ होना था। जैसा कि शारेहे सहीह मुस्लिम हज़रते सय्यिदुना **मुह्युद्दीन यहूया** बिन श-रफ़ नववी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْعَظِيمِ ख़तीबे बग़दादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْعَظِيمِ के हवाले से फ़रमाते हैं, **“खुदकुशी करने वाला येह शख़्स मुनाफ़िक़ था।”**

(शरहे सहीह मुस्लिम लिननववी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْعَظِيمِ, जिल्द:1, स-फ़हा:790, दारुल फ़िक्क)

कबूलिय्यत का दारोमदार ख़ातिमे पर है

मा'लूम हुवा कि ब ज़ाहिर कोई कितनी ही इबादत व रियाज़त करे, दीन की खूब तब्लीग़ व ख़िदमत करे, लेकिन अगर दिल में मुनाफ़क़त और मीठे मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की अ़दावत हो तो नेकियों और इबादत की कोई हकीक़त नहीं और येह भी पता चला कि आ'माल में ख़ातिमे का बहुत अ़मल दख़ल है। चुनान्चे हदीसे पाक में है, **“إِنَّمَا الْأَعْمَالُ بِالنَّوَاتِيهِ”** या'नी आ'माल का दारो मदार ख़ातिमे पर है।

(मुस्नदे इमाम अहमद, जिल्द:8, स-फ़हा:434, रक़मुल हदीस:22898, दारुल फ़िक्क बैरूत)

जन्नत हराम हो गई

नबिय्ये करीम, रऊफ़ुरहीम عَلَيْهِ أَفْضَلُ الصَّلَاةِ وَالسَّلَامِ का इशदि इब्रत बुन्याद है, “तुम से पहली उम्मतों में से एक शख़्स के बदन में फोड़ा निकला। (जब उस में सख़्त तकलीफ़ होने लगी) तो उस ने अपने तरकश (या'नी तीरदान) से तीर निकाला और फोड़े को चीर दिया, जिस से खून बहने लगा और रुक न सका यहां तक कि इस सबब से वोह हलाक हो गया, तुम्हारे रब عَزَّوَجَلَّ ने फ़रमाया, “मैं ने उस पर जन्नत हराम कर दी।”

(सहीह मुस्लिम, रक़मुल हदीस:180 (113), स-फ़हा:71, दारे इब्ने हज़म, बैरूत)

इस हदीस की शरह में शारेहे सहीह मुस्लिम हज़रते अल्लामा नववी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْعَظِيمِ फ़रमाते हैं, “हदीसे पाक से येह नतीजा अख़ज़ किया जाएगा कि उस ने जल्दी मरने (या'नी खुदकुशी) के लिये या बिग़ैर किसी मस्लिहत के ऐसा किया (इसी वजह से उस पर जन्नत हराम फ़रमाई गई) वरना फ़ाइदे के ग़ालिब

गुमान की सूरत में इलाज व दवा के लिये फोड़ा (वगैरा) चीरना हराम नहीं ।”

शरहे मुस्लिम लिन्नववी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَافِي, जिल्द:2, स-फ़हा:127, दारे एह्याउत्तुरसिल अरबी, बैरूत)

खुदकुशी का मा'ना

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! खुदकुशी का मा'ना है, “खुद को हलाक करना ।”
खुदकुशी गुनाहे कबीरा हराम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है । पारह 5, सूरतुन्निसा, आयत नम्बर 29 और 30 में इशादि बारी तआला है ।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَأْكُلُوا أَمْوَالَكُمْ بَيْنَكُمْ
بِالْبَاطِلِ إِلَّا أَنْ تَكُونَ تِجَارَةً عَنْ تَرَاضٍ مِّنْكُمْ وَ
لَا تَقْتُلُوا أَنْفُسَكُمْ إِنَّ اللَّهَ كَانَ بِكُمْ رَحِيمًا ۖ وَمَنْ يَفْعَلْ
ذَلِكَ عُدُوًّا وَإِثْمًا فَسَوْفَ نُصَلِّيهِ نَارًا ۖ وَكَانَ ذَلِكَ
عَلَى اللَّهِ يَسِيرًا ۝

(पारह:5, सूरतुन्निसा, आयत 29,30)

मेरे आका आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, वलिये ने'मत, अज़ीमुल ब-र-कत, अज़ीमुल मर्तबत परवानए शम्ए रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, हामीए सुन्नत, माहीए बिद्अत, अ़ालिमे शरीअत, पीरे तरीक़त, बाइसे ख़ैरो ब-र-कत, हज़रते अ़ल्लामा मौलाना अल्हाज अल हाफ़िज़ अल क़ारी अश्शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن अपने शोहरए आफ़ाक़ तर्जमए कुरआन कन्जुल ईमान में इस का तर्जमा कुछ यूं फ़रमाते हैं ।

तर्जमए कन्जुल ईमान: ऐ ईमान वालो आपस में एक दूसरे के माल नाहक़ न खाओ, मगर येह कि कोई सौदा तुम्हारी बाहमी रिज़ामन्दी का हो । और अपनी जानें क़त्ल न करो बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम पर महरबान है । और जुल्मो ज़ियादती से ऐसा करेगा तो अनक़रीब हम उसे आग में दाख़िल करेंगे और येह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को आसान है ।

इन आयाते मुबारका के तहत हज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْهَادِي “**ख़ज़ाइनुल इरफ़ान**” में फ़रमाते हैं, इस आयत से **खुदकुशी** की हुर्मत (या'नी हराम होना भी) साबित हुवा और नफ़्स का इत्तिबाअ कर के हराम (काम) में मुब्तला होना भी अपने आप को हलाक करना है ।

पारह 2 सूरतुल बक़रह आयत नम्बर 195 में इशादि रब्बानी है :-

وَأَنْفِقُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَلَا تُلْقُوا بِأَيْدِيكُمْ إِلَى التَّهْلُكَةِ
وَاحْسِنُوا إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُحْسِنِينَ ۝

(पारह अब्वल अल बक़रह 195)

तर्जमए कन्जुल ईमान: और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की राह में ख़र्च करो और अपने हाथों हलाकत

में न पड़ो और भलाई वाले हो जाओ। बेशक भलाई वाले अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब हैं।

इस आयते मुक़द्दसा की तफ़्सीर **“ख़ज़ाइनुल इरफ़ान”** में यूँ है, “राहेख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में इन्फ़ाक़ (या'नी राहेख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में ख़र्च) का तर्क भी सबबे हलाकत है और इस्राफ़े बेजा (या'नी बेजा फ़ुजूल ख़र्ची) भी और इसी तरह और चीज़ें भी जो ख़तरा व हलाक का बाइस हों (इन) से बाज़ रहने का हुक्म है, हत्ता कि बे हथियार मैदाने जंग में जाना या ज़हर खाना या किसी तरह खुदकुशी करना।”

खुदकुशी के आ'दाद व शुमार

अफ़सोस! आजकल खुदकुशी का रुज़्हान बढ़ता चला जा रहा है। एक अख़बारी रपोर्ट में है, जिन्नाह पोस्ट ग्रेज्यूएट मेडीकल सेन्टर के फ़राहम कर्दा आ'दादो शुमार के मुताबिक़ सिने 1985 इस्वी में 35 अफ़राद ने खुदकुशी की थी और इस ता'दाद के बढ़ते बढ़ते नौबत यहां तक पहुंची कि सिने 2003 इस्वी में 930 अफ़राद ने खुदकुशी की। इन वारिदातों का दर्दनाक पहलू येह है कि मरने वालों में ज़ियादातर की उम्र 16 से 30 साल के दरमियान थी। ह्यूमन राइट्स कमीशन ऑफ़ पाकिस्तान की रपोर्ट के मुताबिक़ 6 माह या'नी जनवरी से जून सिने 2004 इस्वी के अरसे में 1103 अफ़राद ने खुदकुशी की कामियाब और नाकाम कोशिशें कीं, इन में बच्चों का तनासुब 46.5 फ़ीसद था। गोया आधों आध बच्चे थे। इन बच्चों ने खुदकुशी के लिये जो तरीक़े इख़्तियार किये वोह येह हैं : 21 ने ज़हरीली गोलियां खाईं, ग्यारह ने ज़हर खाया, 8 फ़न्दे से झूल गए, 2 ने खुद को आग लगा दी, एक नहर में कूद गया, 9 ने खुद को गोली मार ली, 2 ने तेज़ाब पिया और एक ने शेह रग काट ली। येह वोह आ'दाद व शुमार हैं जो इन्तिज़ामिया या (अख़बारों) की नज़रों में आ गए वरना बहुत सारी वारिदातें छुपा दी जाती हैं।

खुदकुशी के बा'ज़ अस्बाब

उमूमन घरेलू झगड़ों, तंगदस्तियों, कर्ज़दारियों, बीमारियों, मुसीबतों, कारोबारी परेशानियों और अपनी पसन्द की शादी में रुकावटों या इम्तिहान में नाकामियों वग़ैरा के सबब पैदा होने वाले ज़ेहनी दबाव (या'नी TENSION) के बाइस बा'ज़ इन्तिहाई गुसीले और ज़ब्बाती बद नसीब अफ़राद खुदकुशी कर डालते हैं।

**सुन लो नुक्सान ही होता है बिल आख़िर उन को
नफ़स के वासिते से गुस्सा जो किया करते हैं**

खुदकुशी की पांच दर्दनाक वारिदातें

बा'ज़ वारिदातें रिक़त अंगेज़ मन्ज़र पेश करती हैं, चुनान्चे खुदकुशी की पांच ख़बरें आप के गोश गुज़ार करता हूं: (1) रोज़नामा “जांबाज़” कराची (जुमा'रात 5

अगस्त सिने 2004 इस्वी) मां ने बेटे को दूल्हा बनाया, बारात रुख़्सत की, बारातियों ने बहुत कहा साथ चलो मगर नहीं गई और बा'द में घर के तमाम तालों पर चाबियां लगा कर ज़ेवर और रक़म वगैरा किसी के हवाले कर के नहर में छलांग लगा दी और दो^२ दिन बा'द लाश मिली । (2) “रोज़नामा ज़ुर'अत” (10 अगस्त सिने 2004 इस्वी) की ख़बर येह है कि 6 माह क़ब्ल शादी हुई थी, नौ बियाहता दुल्हन रूठ कर मयके चली गई थी, बीवी का फ़िराक़ बरदाश्त न करने की बिना पर दूल्हा ने खुद को गोली मार ली । (3) “रोज़नामा इन्तिखाब” (28 अगस्त सिने 2004 इस्वी) की ख़बर येह है कि एक बाप ने अपने एक बेटे, दो बेटियों, और इन बच्चों की अम्मी को क़त्ल करने के बा'द खुदकुशी कर के अपनी ज़िन्दगी का ख़ातिमा कर दिया । रोज़नामा “नवाए वक़्त” कराची 5 अगस्त सिने 2004 इस्वी की दो^२ ख़बरें हैं, (4) डिग्री (सिन्ध) में शादी न कराने पर नौ जवान फांसी चढ़ गया । (5) बाप ने गुस्से में तमांचा मारा तो 14 साला लड़के ने खुद को बाथरूम में बन्द कर के आग लगा दी । चन्द माह क़ब्ल इसी अ़लाक़े में एक और लड़के ने बुलन्द इमारत से कूद कर खुदकुशी कर ली थी ।

ख़बरों से नाम निकाल देने की हिकमत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मुसलमानों को मरने के बा'द अच्छाई के साथ याद करने का हदीसे पाक में हुक्म है लिहाज़ा ख़बरों से नाम निकाल दिये हैं क्यूं कि शनाख़्त के साथ मुसलमान की खुदकुशी का बिला ज़रूरते शर-ई तज़्किरा उस की आबरू रेज़ी है जो कि हराम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है । एक अनपढ़ आदमी भी इस बात को समझ सकता है कि नाम व शनाख़्त के साथ खुदकुशी की ख़बर मुश्तहिर करने से मय्यित की आबरू रेज़ी के साथ साथ उस के अहले ख़ानदान की भी सख़्त बदनामी और दिल आज़ारी होती है । काश ! हमारे अख़बारात वाले मुसलमान भाई इस गुनाहे अज़ीम से ताइब हो कर आइन्दा बाज़ रहने की तरकीब बना लें । कभी आप के अ़लाक़े या ख़ानदान में भी مَعَاذَ اللَّهِ عَزَّوَجَلَّ कोई खुदकुशी कर बैठे तो बिला इजाज़ते शर-ई किसी को मत बताया करें, अगर कभी येह गुनाह कर बैठ हैं तो तौबा के शर-ई तकाज़े पूरे कर लीजिये । हां शनाख़्त बताए बिगैर खुदकुशी करने वाले का इस तरह तज़्किरा करना जाइज़ है कि मुख़ात़ब पहचान न सके ।

मुजरिम हूं दिल से ख़ौफ़े क़ियामत निकाल दो

पर्दा गुनाहगार के ऐबों पे डाल दो

हर दो^२ मिनट में खुदकुशी की तीन^३ वारिदातें !

गुनाहों की कसरत और अहवाले आख़िरत के मुआमले में जहालत के

सबब अफ़सोस हमारे वतने अज़ीज़ पाकिस्तान में खुदकुशी का रुज़्हान बढ़ता ही चला जा रहा है। एक अख़बारी रपोर्ट के मुताबिक़ अगस्त सिने 2004 इस्वी में पाकिस्तान में खुदकुशी की 68 वारिदातें हुईं जिन में बाबुल मदीना कराची का पहला नम्बर रहा जब कि दूसरा नम्बर **मदीनुतल औलिया** मुल्तान वालों का आया। उसी अख़बार के मुताबिक़ दुन्या में हर 40 सेकन्ड में खुदकुशी की एक वारिदात होती है !

क्या खुदकुशी से जान छूट जाती है ?

खुदकुशी करने वाले शायद येह समझते हैं कि हमारी जान छूट जाएगी हालांकि इस से जान छूटने के बजाए नाराज़ीए रब्बुल इज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ की सूरत में निहायत बुरी तरह फंस जाती है। खुदा عَزَّوَجَلَّ की कसम ! खुदकुशी का अज़ाब बरदाश्त नहीं हो सकेगा।

आग में अज़ाब

हदीस पाक में है, “जो शख़्स जिस चीज़ के साथ खुदकुशी करेगा वोह जहन्नम की आग में उसी चीज़ के साथ अज़ाब दिया जाएगा।”

(सहीह बुख़ारी शरीफ़ रक़मुल हदीस:6652, जिल्द:4, स-फ़हः:289, दारुल कुतुबिल इल्मिय्या, बैरूत)

आग के हथियार से अज़ाब

हज़रते सय्यिदुना साबित बिन ज़ह़ाक رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि राहते क़ल्बे नाशाद, महबूबे रब्बुल इबाद عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इशादे इब्रत बुन्याद है, “जिसने लोहे के हथियार से खुदकुशी की तो उसे जहन्नम की आग में उसी हथियार से सख़्त अज़ाब दिया जाएगा।”

(सहीह बुख़ारी, जिल्द:1, स-फ़हः:459, रक़मुल हदीस:1363, मत्बूआ दारुल कुतुबिल इल्मिय्या, बैरूत)

गला घूटने का अज़ाब

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी, सरकारे दो^ए आलम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, रसूले मोह़तशम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने इब्रत निशान है, “जिस ने अपना गला घूटा तो वोह जहन्नम की आग में अपना गला घूटता रहेगा और जिस ने खुद को नेज़ा मारा वोह जहन्नम की आग में खुद को नेज़ा मारता रहेगा।”

(अल एहसान बित्तरतीब सहीह इब्ने हिब्बान, जिल्द:7, स-फ़हः:590, रक़मुल हदीस:5955, दारुल कुतुबिल इल्मिय्या, बैरूत)

ज़ख़्म व ज़हर के ज़रीए अज़ाब

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि अल्लाह के प्यारे रसूल, रसूले मक़बूल, सय्यिदा आमिना के गुलशन के महकते फूल عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ وَرَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا का फ़रमाने इब्रत निशान है, “जिस ने लोहे के हथियार से खुदकुशी की तो दोज़ख़ की

आग में वोह हथियार उस के हाथ में होगा और वोह उस से अपने आप को हमेशा ज़ख्मी करता रहेगा और जो शख्स ज़हर खा कर खुदकुशी करेगा वोह नारे दोज़ख़ में हमेशा ज़हर खाता रहेगा और जो पहाड़ से गिर कर खुदकुशी करेगा वोह नारे दोज़ख़ में हमेशा गिरता रहेगा ।”

(सहीह बुखारी, रक़मुल हदीस:5778, जिल्द:4, स-फ़हा:43, दारुल कुतुबिल इल्मिय्या, बैरूत)

खुदकुशी को जाइज़ समझना कुफ़्र है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हदीसे पाक में बयान कर्दा दाइमी (या'नी हमेशगी वाला) अज़ाब उस को मिलेगा जो कि खुदकुशी की हुर्मत से वाकिफ़ होने के बा वुजूद हलाल समझ कर खुदकुशी करेगा । क्यूं कि हरामे क़र्ई को जानबूझ को हलाल समझने वाला काफ़िर हो जाता है । अगर खुदकुशी करने वाले का ख़ातिमा ईमान पर हुवा तो उस के हक़ में यहां दाइमी अज़ाब से मुराद तवील मुद्त तक का अज़ाब है ।

दाइमी अज़ाब की सूतें

इस हदीसे मुबारक में खुदकुशी करने वाले के बारे में येह बयान है कि “हमेशा अज़ाब पाता रहेगा ।” इस की शरह करते हुए शारेहे सहीह मुस्लिम हज़रते सय्यिदुना मुह्युद्दीन यह्या बिन शरफ़ नववी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْغَوِي ने कुछ अक्वाल ज़िक्र फ़रमाए हैं:-

(1) जिस शख्स ने खुदकुशी का फ़े'ल हलाल समझ कर किया हालांकि उस को खुदकुशी के हराम होने का इल्म था तो वोह काफ़िर हो जाएगा और हमेशा हमेशा के लिये अज़ाब पाता रहेगा । क्यूंकि काइदा है कि “हरामे क़र्ई को हलाल या हलाले क़र्ई को हराम समझना कुफ़्र है” जब कि उन के हरामे क़र्ई और हलाले क़र्ई होने का इल्म हो । म-सलन शराब पीना हरामे क़र्ई है तो अब उस को इल्म है कि शराब हराम है मगर फिर भी उस को हलाल समझ कर पियेगा तो काफ़िर हो जाएगा इसी तरह जिना हरामे क़र्ई है अगर इस को कोई हलाल समझ कर करेगा तो काफ़िर हो जाएगा । (2) हमेशा अज़ाब में रहने के दूसरे मा'ना येह भी हो सकते हैं कि तवील मुद्त तक अज़ाब में रहेगा लिहाज़ा अगर किसी मुसल्मान के बारे में येह वारिद हो कि वोह हमेशा अज़ाब में रहेगा । तो यहां येह मा'ना लिये जाएंगे कि तवील मुद्त तक अज़ाब में रहेगा । जैसा कि मुहावरतन कहा जाता है, “एक बार येह चीज़ ख़रीद लीजिये हमेशा का आराम हो जाएगा ।” हालांकि हमेशा का आराम मुम्किन नहीं । तो यहां इस से मुराद तवील मुद्त का आराम है । तो इस हदीसे पाक में भी लम्बे अरसे तक का अज़ाब मुराद है । जैसा बतौरे दुआ कहा जाता है خَلَّدَ اللَّهُ مُلْكَ السُّلْطَانِ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ बादशाह का मुल्क हमेशा सलामत रखे यहां मुराद येही है कि

ता देर काइम रखे । (3) तीसरा क़ौल येह है कि खुदकुशी की सज़ा तो येही है मगर अल्लाह तआला ने मुअ्मिनीन पर करम फ़रमाया और ख़बर दे दी कि जो ईमान पर मरेगा वोह दोज़ख़ में हमेशा न रहेगा (या'नी مَعَاذَ اللَّهِ عَزَّوَجَلَّ अगर कोई गुनहगार मुसल्मान दोज़ख़ में गया भी तो कुछ अरसा सज़ा पाने के बा'द बिल आख़िर दोज़ख़ से निकाल कर हमेशा हमेशा के लिये दाख़िले जन्नत कर दिया जाएगा ।)

(शरहे मुस्लिम लिननववी, जिल्द:1, स-फ़हा:796, दारुल फ़िक्क बैरूत)

सेकन्ड के करोडवें हिस्से का अज़ाब

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! مَعَاذَ اللَّهِ عَزَّوَجَلَّ कोई येह न केह दे कि चलो बिल आख़िर छुटकारा तो मिल ही जाएगा कुछ अरसे का अज़ाब बरदाश्त कर लेंगे । जो ऐसा कहेगा वोह अज़ाबे खुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ की तख़्फ़ीफ़ या'नी इस को हल्का समझने के बाइस काफ़िर हो जाएगा और बिगैर तौबा मरने की सूरत में हमेशा हमेशा जहन्नम में रहेगा । अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की तरफ़ से दिया जाने वाला अज़ाब इस क़दर शदीद होता है कि उस को कुछ अरसा तो क्या कोई बरदाश्त करेगा खुदा की क़सम ! एक सेकन्ड के करोडवें हिस्से का अज़ाब भी कोई बरदाश्त नहीं कर सकता ।

मो'मिन का क़ैदख़ाना

यक़ीन खुदकुशी जुमें अज़ीम और उस पर सज़ाए शदीद व अज़ाबे मज़ीद है अगर खुदा न ख़्वास्ता किसी को खुदकुशी करने के वस्वसे आए तो उस को चाहिये कि बयान कर्दा वर्ईदात से इब्रत हासिल करे और शैतान के वार को नाकाम बनाए । अगर्चे कैसी ही परेशानियां हों सब्रो रिज़ा का पैकर बन कर मर्दाना वार हालात का मुक़ाबला करे । याद रखिये ! हदीसे पाक में है, **الدُّنْيَا سَجْنُ الْمُؤْمِنِ وَحَنَةُ الْكَافِرِ**,
“दुन्या मो'मिन के लिये क़ैदख़ाना और काफ़िर के लिये जन्नत है ।”

(सहीह मुस्लिम, स-फ़हा:1582, रक़मुल हदीस:2956, दारे इब्ने हज़्म, बैरूत) **मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** ज़ाहिर है क़ैदख़ाने में तकलीफ़ें ही तकलीफ़ें होती हैं । हज़रते मौलाना जलालुद्दीन रूमी رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं,

हस्त दुन्या जन्नत आं कुफ़ार रा अहले जुल्म व फ़िस्क़ आं अशरार रा
बहरे मो'मिन हस्त ज़िन्दां ई मक़ाम नेस्त ज़िन्दां जाए ऐशो एहतिशाम

(या'नी काफ़िरों, ज़ालिमों, फ़ासिकों और शरीरों के लिये येह दुन्या जन्नत है जब कि ईमान वालों के लिये येह दुन्या जेल ख़ाना है, जेल ख़ान ऐशो राहत का मक़ाम नहीं ।)

अल्लाह ﷻ आजमाता है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह तबारक व तआला मुसल्मानों को इम्तिहानात में मुब्तला फ़रमा कर उन के **सय्यिआत** (या'नी गुनाहों) को मिटाता

और दरजात को बढ़ाता है। जो मसाइब व आलाम पर सब्र करने में कामियाब हो जाता है वोह अल्लाह ﷻ की रहमतों के साए में आ जाता है। चुनान्चे पारह दूसरा, सूरतुल बकरह आयत नम्बर 155 ता 157 में इशादे रब्बानी है:-

وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ بِشَيْءٍ مِّنَ الْخَوْفِ وَالْجُوعِ وَنَقْصٍ مِّنَ
الْأَمْوَالِ وَالْأَنْفُسِ وَالْعَمَلِ وَالضَّرِيبِ وَالْزَّيْنِ إِذَا
أَصَابَتْهُمْ مُصِيبَةٌ قَالُوا إِنَّا لِلَّهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُونَ ۝ أُولَئِكَ
عَلَيْهِمْ صَلَوَاتٌ مِّن رَّبِّهِمْ وَرَحْمَةٌ وَأُولَئِكَ هُمُ الْمُهْتَدُونَ ۝

तर्जमए कन्जुल ईमान: और जरूर हम तुम्हें आजमाएंगे कुछ डर और भूक से और कुछ मालों और जानों और फलों की कमी से, और खुशख़बरी सुना उन सब्र वालों को कि जब उन पर कोई मुसीबत पड़े तो कहें, “हम अल्लाह ﷻ के माल हैं और हम को उसी की तरफ़ फिरना। येह लोग हैं जिन पर उन के रब ﷻ की दुरूदें हैं और रहमत। और येही लोग राह पर हैं।”

**दूर दुन्या के हो जाएं रंजो अलम, मुझ को मिल जाए मीठे मदीने का ग़म
हो करम हो करम या खुदा ﷻ हो करम, वासिता उस का जो शाहे अबरार ﷺ है**

बे सब्री से मुसीबत दूर नहीं होती

आप ने मुलाहज़ा फ़रमाया कि अल्लाह तअ़ाला मुसीबतें दे कर आज़माता है तो जिस ने उन में बे सब्री का मुज़ाहरा किया, वावेला मचाया, ना शुक्री के कलिमात ज़बान से अदा किये या बेज़ार हो कर ﷻ खुदकुशी की राह ली, वोह इस इम्तिहान में बुरी तरह ना काम हो कर पहले से करोड़ हा करोड़ गुना ज़ाइद मुसीबतों में गरिफ़्तार हो गया। बे सब्री करने से मुसीबत तो जाती रही उल्टा सब्र के ज़रीए हाथ आने वाला अज़ीमुश्शान स़वाब ज़ाएअ़ हो जाता है जो कि बज़ाते खुद एक बहुत बड़ी मुसीबत है।

मुसीबत से बड़ी मुसीबत

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह इब्ने मुबारक ﷺ का फ़रमाने अ़लीशान है, “मुसीबत (इब्तिदाअन) एक होती है (मगर) जब मुसीबत ज़दा जज़अ (या'नी बे सब्री और वावेला) करता है तो (तो एक के बजाए) दो² मुसीबतें हो जाती हैं (1) एक तो वोही मुसीबत बाक़ी रहती है और दूसरी (2) मुसीबत (सब्र करने पर मिलने वाले) अज़्र का ज़ाएअ़ हो जाना है और येह (अज़्र ज़ाएअ़ होने वाली दूसरी मुसीबत) पहली (मुसीबत) से बढ़ कर है।”

(तम्बीहुल गाफ़िलीन, स-फ़हा:143, दारुल किताबिल अरबी, बैरूत)

या'नी पहले पहल मुसीबत का नुक़सान सिर्फ़ दुन्यवी ही था मगर सब्र

की सूरत में हाथ आने वाले अज़ीमुश्शान अज़्र का बे सब्री के बाइस ज़ाएअ हो जाना इस लिये उस से भी बड़ी मुसीबत है कि इस में आखिरत का बहुत बड़ा नुक़सान है ।

صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

रोना मुसीबत का तू मत रो आले नबी के दीवाने

رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ

कबों बला वाले शहज़ादों पर भी तूने ध्यान दिया ?

तीन सौ³⁰⁰ द-रजात की बुलन्दी

हदीसे मुबारक में है, “जिस ने मुसीबत पर सब्र किया यहां तक कि उस (मुसीबत) को अच्छे **सब्र** के साथ लौटा दिया अल्लाह तबारक व तआला उस के लिये तीन सौ³⁰⁰ द-रजात लिखेगा ।”

(अल फ़िरदौस बिमा नुरल ख़िताब, जिल्द:2, स-फ़हः416, दारुल कुतुबिल इल्मिया, बैरूत)

ज़ख़मी हो कर हंस पड़ना

हमारे अस्लाफ़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِمْ तो मुसीबत पर मिलने वाले स़वाब के तसव्वुर में ऐसे मुन्हमिक हो जाते थे कि उन्हें मुसीबत की परवाह ही न रहती जैसा कि मन्कूल है, हज़रते सय्यिदुना फ़तह मौसिली رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की अहलियाए मोहतरमा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهَا एक मरतबा ज़ोर से गिरी जिस से नाखुन मुबारक टूट गया । लेकिन दर्द से कराहने और “हाए” “ऊह” वगैरा करने की बजाए हंसने लगीं !! किसी ने पूछा, क्या ज़ख़म में दर्द नहीं हो रहा ? फ़रमाया, “सब्र के बदले में हाथ आने वाले स़वाब की खुशी में मुझे चोट की तकलीफ़ का ख़याल ही न आ सका ।” मज़ीद फ़रमाया, “अगर तू वाक़ेई अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को अज़मत वाला समझता है तो इस की निशानी येह है कि बीमारी में हफ़्ते शिकायत ज़बान पर न लाए और मुसीबत आ पड़े तो उसे दूसरों पर ज़ाहिर न होने दे ।” (क्यूं कि बिला ज़रूरत इस का इज़हार बे सब्री की अलामत है जैसा कि आजकल मा'मूली नज़ला और जुकाम या दर्दे सर भी हो जाए तो लोग हर एक को केहते फिरते हैं ।)

(कीमियाए सआदत, जिल्द:2, स-फ़हः782, मत्वूआ इन्तिशारते गंजीना तेहयान)

टूटे गो सर पे कोहे बला सब्र कर, ए मुसल्मां न तू डगमगा सब्र कर
लब पे हफ़्ते शिकायत न ला सब्र कर, कि येही सुन्नते शाहे अबरार ﷺ है
काश मैं मुसीबत ज़दा होता !

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमें चाहिये कि कैसी ही मुसीबत आ जाए उस मुसीबत के बड़े होने पर नज़र न रखें बल्कि उस पर

मिलने वाले स़वाब पर गौर करें। إِنَّ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ इस तरह **स़ब्र** करना आसान हो जाएगा और अगर हम **स़ब्र** करने में कामियाब हो गए तो बरोजे क़ियामत उस के अज़ीमुश्शान स़वाब को देख कर लोग रश्क करेंगे। चुनान्वे **अल्लाह के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अनिल उयूब** عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने ज़ीशान है, जब बरोजे क़ियामत अहले बला (या'नी दुन्या में जिन्हों ने बीमारियां, बे रूज़गारियां और परेशानियां उठाई उन) को स़वाब अ़ता किया जाएगा तो अ़फ़ियत वाले (या'नी मालदार, सिद्दहतमन्द और दुन्या में सुख पाने वाले लोग) तमन्ना करेंगे, काश ! दुन्या में हमारी खालें केंचियों से काटी जाती (और आज क़ियामत में हमें भी येह अज़ीमुश्शान स़वाब मिल जाता !)

(सुननुत्तिरमिज़ी, जिल्द:4, रक़मुल हदीस:2410, मत्बूआ दारुल फ़िक्क बैरूत)

मालो दौलत न दे, कोई सरवत न दे चाहे इज़्ज़त न दे, कोई शोहरत न दे
बल्कि दुन्या की कोई मुसरत न दे तुझ से अ़त्तार तेरा त़लबगार है
रौशन क़ब्रें

मन्कूल है कि, “किसी बुजुर्ग رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने हज़रते सय्यिदुना हसन बिन ज़कवान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ को उन की वफ़ात के एक साल बा'द ख़्वाब में देखा तो इस्तिफ़सार किया, कौन सी क़ब्रें ज़ियादा रौशन हैं ?” फ़रमाया, “दुन्या में मुस़ीबतें उठाने वालों की।”

(तम्बीहुल मुत्तरीन, स-फ़हः:197, दारुल बशाइर दिमिश्क)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आपने ! वोह घुप अंधेरी क़ब्र जिसे दुन्या का कोई बर्की बल्ब रौशन नहीं कर सकता إِنَّ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ वोह मीठे मीठे आक़ा صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के नूर के स़दके परेशान ह़ालों के लिये नूर नूर हो कर जगमगा उठेगी।

ख़्वाब में भी ऐसा अंधेरा कभी देखा न था

صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

जैसा अंधेरा हमारी क़ब्र में सरकार है

عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

या रसूलल्लाह आ कर क़ब्र रौशन कीजिये

जात बेशक आप की तो मम्बए अनवार है

जन्नत तकलीफ़ों में ढांपी हुई है

إِنَّ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ मुस़ीबत ज़दों की क़ब्रें रौशन होंगी और जन्नत में मस्कन भी मिलेगा। जन्नत के त़लबगारो ! इस हदीसे पाक को सीने में उतार लो जिस में सरकारे नामदार, दोः अ़लम के मालिको मुख़्तार, शहन्शाहे अबरार صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इर्शाद फ़रमाया है, जहन्नम शहवतों (या'नी नफ़्सानी ख़्वाहिशों) से ढांपी हुई है और जन्नत तकलीफ़ों से ढांपी हुई है।

(सहीह बुख़ारी, जिल्द:4, स-फ़हः:234, रक़मुल हदीस:6487, मत्बूआ दारुल कुतुबिल इल्मिया, बैरूत)

म-दनी काफ़िले में ज़ियादा स़्वाब कब मिलेगा ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मालो दौलत और आसाइश व राहत की त़लब में जो गुनाह व मा'सिय्यत करने से बाज़ नहीं आते उन्हें इस हदीसे पाक से इब्रत हासिल करनी चाहिये कि जहन्नम ख़्वाहिशात से ढांपी हुई है । और त़रह त़रह की तकालीफ़ आने के बा वुजूद जो **स़ब्र** इस्तिक़्ामत का मुज़ाहरा करते हैं उन के लिये बिशारत है कि जन्नत तकलीफ़ों में ढांपी हुई है, लिहाज़ा दीन के मुअ़ामले में म-स़लन नमाज़ व रोज़ा वगैरा के लिये जितनी तकालीफ़ ज़ियादा उठानी पड़ी उतना ही स़्वाब ज़ियादा मिलेगा । राहे खुदा عَزَّوَجَلَّ में सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये म-दनी काफ़िलों में सफ़र की तकालीफ़ उठाने वालों का भी ऐसा ही मुअ़ामला है म-स़लन कारोबारी छुट्टी के सबब, मस्जिद में A.C. या दीगर सहूलियात के बाइस़ या किसी दूसरे इस्लामी भाई ने अख़राजात दे दिये इस वजह से म-दनी काफ़िले में सफ़र किया तो तकलीफ़ कम होने की सूरत में स़्वाब में भी कमी आएगी और अगर कारोबार ज़ोरों पर होने के बा वुजूद दुकान बन्द कर के अपने ज़ाती ख़र्च पर सख़्त गर्मियों में ऐसे देहात में म-दनी काफ़िले के साथ सफ़र कर के गया जहां पंखों का भी दुरुस्त इन्तिज़ाम न हो, वुजू के पानी की भी क़िल्लत हो तो ऐसे म-दनी काफ़िले के खुशनसीब मुसाफ़िर को स़ब्र करने पर स़्वाब का अम्बार लग जाएगा ।

प्यारे भाई ! मा'मूली सी मुश्किल पर घबराता है

رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ

देख हुसैन ने दीन की ख़ातिर सारा घर कुर्बान किया

गुनाहों के सबब भी मुसीबत आती है

मुसीबत आने पर दिल को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से डराने, स़ब्र पर इस्तिक़्ामत पाने और ग़लत क़दम उठाने से खुद को बचाने के लिये तौबा व इस्तिग़फ़ार करते हुए येह ज़ेहन बनाइये कि हम पर जो मुसीबत नाज़िल हुई है उस का सबब हमारे अपने ही करतूत हैं जैसा कि पारह 25 सूरतुशशूरा की 30 वीं आयते करीमा में इशादे रब्बानी है,

تَرْجَمَةُ كَنْزُ الْإِيمَانِ: और तुम्हें जो मुसीबत पहुंची **وَمَا أَصَابَكُمْ مِنْ مُصِيبَةٍ فَمَا كَسَبَتْ أَيْدِيكُمْ وَيَعْفُوا** वोह इस के सबब है जो तुम्हारे हाथों ने कमाया और बहुत **عَنْ كَثِيرٍ** कुछ तो मुअ़ाफ़ फ़रमा देता है ।

(पारह:25, सूरतुशशूरा, आयत:30)

तकलीफ में गुनाहों का कफ़ार भी है

इस आयते मुक़द्दसा के तहत हज़रते स़दुरल अफ़ाज़िल मौलाना सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عليه ورحمة الله الهادي **ख़ज़ाइनुल इरफ़ान शरीफ़** में फ़रमाते हैं, “येह ख़िताब उन **मुअ्मिनीन मुकल्लिफ़ीन** से है जिन से गुनाह सरज़द होते हैं, जो तकलीफ़ों और मुसीबतें **मुअ्मिनीन** को पहुंचती हैं अक्सर उन तकलीफ़ों को अल्लाह तआला उन के गुनाहों का कफ़ार कर देता है। और कभी मो’मिन की तकलीफ़ उस के रफ़ए द-रजात (या’नी बुलन्दीए द-रजात) के लिये होती है।”

सब्र कर जिस्म जो बीमार है तश्वीश न कर
येह म-रज़ तेरे गुनाहों को मिटा जाता है
मैं ने तो किसी को नुक़सान नहीं पहुंचाया !

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जब भी मुसीबत आए हमें घबरा कर रब्बुल आलमीन حَلِّ عِلَّاه की बारगाहे बेकस पनाह में रुजूअ कर के ख़ूब तौबा व इस्तिग़फ़ार करना चाहिये। مَعَاذُ اللَّهِ عَزَّوَجَلَّ ज़बान तो ज़बान दिल में भी ऐसी बात नहीं लानी चाहिये कि मैं ने तो किसी को कोई नुक़सान नहीं पहुंचाया, मैं तो सब के साथ अच्छाई करता हूं आख़िर “क्या ख़ता मुझ से ऐसी हुई है जिस की मुझ को सज़ा मिल रही है !” ऐसी नादानी भरी बातें सोचने के बजाए अज़िज़ी भरा म-दनी ज़ेहन बनाइये, अपने आप को सरापा ख़ता तसव्वुर करते हुए हर हाल में खुदाए जुलजलाल عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा कीजिये कि मैं तो सख़्ततरीन मुजरिम होने के सबब शदीद अज़ाब का हक़दार हूं, मुझ पर आई हुई मुसीबत अगर मेरे गुनाहों की सज़ा है तो मैं बहुत ही सस्ता छूट रहा हूं, वरना दुन्या के बजाए आख़िरत में जहन्नम की सज़ा मिली तो मैं कहीं का न रहूंगा।

मेरे आ’माल का बदला तो जहन्नम ही था
मैं तो जाता मुझे सरकार ﷺ ने जाने न दिया

(सामाने बख़्शिश)

आग के बदले खाक

एक बार एक बुजुर्ग رحمة الله تعالى عليه के सर पर किसी ने त़शत भर कर खाक डाल दी। आप رحمة الله تعالى عليه ने अपने कपड़ों से उस खाक को झाड़ दिया और अल्लाह तआला का शुक्र अदा किया। लोगों ने अर्ज़ की, आप رحمة الله تعالى عليه शुक्र किसी बात का अदा कर रहे हैं ? फ़रमाया, जो आग में डाले जाने का मुस्तहक़ हो (या’नी जिस के सर पर आग डालना चाहिये) अगर उस के सर पर फ़क़त खाक

डाल देने पर इक्तिफ़ा किया जाए तो क्या येह शुक्र का मक़ाम नहीं ?

(माखूज़ अज़: कीमियाए सआदत, जिल्द:2, स-फ़हा:805, कुतुबख़ाना ईरान)

जब भी मुस़ीबत आए नज़र आख़िरत पे हो

सरकार ﷺ ! म-दनी ज़ेहन दो म-दनी ख़याल दो

सब्र करने का तरीक़ा

ग़म ग़लत करने का एक तरीक़ा येह भी है कि अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَامُ وَالسَّلَام और खुसूसन सय्यिदुल अम्बिया मदीने वाले मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर आने वाले मस़ाइब व आलाम याद किये जाएं। चुनान्वे मैदाने ताइफ़ में ज़ख़मी होने वाले मज़्लूम आक़ा और मीठे मीठे मा'सूम मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने ढारस निशान है, “जिसे कोई मुस़ीबत पहुंचे उसे चाहिये कि अपनी मुस़ीबत के मुक़ाबले में मेरी मुस़ीबत याद करे कि बेशक वोह (मेरी मुस़ीबत) आ'ज़मुल मस़ाइब (या'नी सब मुस़ीबतों से बढ़ कर) है।”

(जामेउल अह़दीस लिस्सुयूती, जिल्द:7, स-फ़हा:125, रक़मुल हदीस:21346, मत्बूआ दारुल फ़िक्क बैरूत)

दुख दर्द के मारों को ग़म याद नहीं रहते

जिस वक़्त तसव्वुर में सरकार ﷺ नज़र आए

हरगिज़ ऐसे अल्फ़ाज़ ज़बान पर नहीं लाने चाहियें कि हम इतनी बड़ी मुस़ीबत के क़ाबिल नहीं थे, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने हमारी ताक़त से भी ज़ियादा हम पर बोझ डाल दिया है। ऐसा केहना कुफ़्र है इस लिये कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ किसी पर उस की ताक़त से ज़ियादा बोझ डालता ही नहीं जैसा की **सूरतुल बक़रह** की आख़िरी आयत में इश़ादि रब्बानी है :-

لَا يُكَلِّفُ اللهُ نَفْسًا إِلَّا **तर्जमए कन्जुल ईमान:** अल्लाह عَزَّوَجَلَّ किसी को उस की **وَسَعَهَا** वुस्अत से ज़ियादा तकलीफ़ नहीं देता।

(पारह:3, अल ब-क़रह, आयत:286)

आग लग जाए खुशियों के सामान को

बस तेरे ग़म में रोता रहूं ज़ार ज़ार

तकलीफ़ ज़ियादा तो स़वाब भी ज़ियादा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मुस़ीबत फिर मुस़ीबत है चाहे कितनी ही छोटी हो वोह बड़ी ही महसूस होती है। म-सलन नज़ला बहुत छोटी बीमारी है मगर जिस को हो जाए वोह येही समझता है कि मुझ पर मुस़ीबत का पहाड़ टूट पड़ा है। और जिस को केन्सर हो जाए वोह तो बेचारा बिल्कुल ही दिल छोड़ देता है हालांकि हर एक को हिम्मत रखनी चाहिये। नज़ले वाला हो या केन्सर वाला सब को एक दिन मरना, अंधेरी क़ब्र में उतरना और हिसाबे आ'माल के मराहिल से गुज़रना है। दुन्या में तकलीफ़ जितनी शदीद उतना स़वाब भी मज़ीद होगा। **अल्लाह के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़ज़हुन अनिल**

उयूब عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इर्शाद फ़रमाया, “बड़ा स़्वाब बड़ी बलाओं (या’नी बड़ी मुसीबतों) के साथ है। अल्लाह तआला जब किसी क़ौम को आज़्माइश में मुब्तला फ़रमा देता है, फिर जो आज़्माइश पर राज़ी रहा उस की लिये रिज़ा है और जो नाराज़ हुवा उस के लिये नाराज़ी।”

(सुनने इब्ने माजा, जिल्द:4, स-फ़हः:374, रक़मुल हदीस:4031, मत्बूआ दारुल मारिफ़ा, बैरूत)

फूंक दे जो मेरी खुशियों के चमन को आक़ा ﷻ
चाक दिल चाक जिगर सोज़िशे सीना दे दो
अपने से बड़े मुसीबत ज़दा को देखो

स़ब्र का ज़ेहन बनाने का एक तरीक़ा येह भी है कि अपने से बड़ कर मुसीबत ज़दा के बारे में ग़ौर किया जाए इस तरह अपनी मुसीबत हल्की महसूस होगी और **स़ब्र** करना आसान होगा। हज़रते सय्यिदुना शअबी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाया करते, “अगर अपने ऊपर आई हुई आफ़त का लोग उस से बड़ी आफ़त के साथ मुवाज़ना करते तो ज़रूर बा’ज आफ़तों को अफ़ियत जानते।”

(तम्बीहुल मुग़तरीन, अल बाबुस्सालिस (अदमे ए’तेबारे शकरहुम), स-फ़हः:212, तब्बअ, दारुल बशाइर, दिमिश्क)

नेकियों की रीस करो

इमामुस्स़ाबिरीन, सय्यिदुशशाकिरीन, **सुल्तानुल मुतवक्किलीन** صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने अम्बरीन है, “दो ख़स्लते ऐसी हैं कि जिस में येह होंगी अल्लाह तआला उसे अपने नज़्दीक शाकिर व स़ाबिर लिख देगा। उन में से एक येह है कि वोह दीन के मुआमले (या’नी इल्मो अमल) में अपने से बरतर की तरफ़ नज़र करे पस उस की पैरवी करे और दूसरी येह कि दुन्या के मुआमले में अपने से कमतर की तरफ़ देखे पस अल्लाह तआला की हम्द करे।”

(सुननुत्तरिमिज़ी, जिल्द:4, स-फ़हः:229, रक़मुल हदीस:2525, मत्बूआ दारुल फ़िक्क बैरूत)

कीजिये दूर दुन्या के रंजो अलम
आप ﷻ **पर मेरे हालात हैं आशकार**
कौन किस की तरफ़ देखे ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जो नकियों में कमज़ोर हैं वोह नेकियों में आगे बढ़े हुआं पर रश्क कर के उन की तरह नेकियां बढ़ाने की जुस्तुजू करें और मरीज़ वगैरा अपने से बड़े मरीज़ की तरफ़ नज़र रखते हुए शुक्र अदा करें कि मुझे फुलां के मुक़ाबले में तकलीफ़ कम है। म-सलन जोड़ों के दर्द वाला पेट के दर्द वाले को देखे कि येह मुझ से ज़ियादा अज़ियत में है, **T.B.** वाला केन्सर वाले की तरफ़ देखे कि वोह बे चारा ज़ियादा तकलीफ़ में है। जिस का एक हाथ कट गया

वोह उस की तरफ़ देखे जिस के दोनों हाथ कट चुके हैं, जिस की एक आंख ज़ाएअ हो गई हो वोह नाबीना की तरफ़ नज़र करे। कम तनख़्वाह वाला बे रूज़गार की तरफ़, फ़्लेट में रहने वाला कोठी वाले को देखने के बजाए बे घर को देखे। शायद कोई सोचे कि नाबीना और केन्सर वाला किस की तरफ़ देखें ? वोह भी अपने से ज़ियादा तकलीफ़ वालों की तरफ़ देखें म-सलन नाबीना उस पर ग़ौर करे जो नाबीना होने के साथ हाथ पांव से भी मा'जूर हो, इसी तरह केन्सर वाला ग़ौर करे कि फुलां को केन्सर के साथ साथ दिल का म-रज़ या फ़ालिज भी है। बहरहाल दुन्या में हर आफ़त से बड़ी आफ़त मिल जाएगी। खुदा ﷻ की क़सम ! सब से बड़ी मुसीबत कुफ़्र है हर वोह मुसलमान जो कितना ही बड़ा मरीज़ व ग़मज़दा हो वोह अल्लाह ﷻ का शुक्र अदा करे कि उस ने मुझे ईमान की ने'मत से नवाज़ा और कुफ़्र की मुसीबत से महफ़ुज़ रखा है।

असल बरबाद कुन अम्राज़ गुनाहों के हैं

क्यूं तू येह बात फ़रामोश किया जाता है

सब्र करने का तरीका

मुसीबत पर सब्र को आसान बनाने का एक अमल येह भी है कि इस तरह अपना ज़ेहन बनाया जाए कि येह मुसीबत क़लीलुल मुद्त, अरिज़ी और हल्की हो कर जल्द ख़त्म हो जाने वाली है मगर **सब्र** की सूरत में मिलने वाला अज़्रो स़वाब कभी ख़त्म न होगा। लिहाज़ा **सब्र** ही में भलाई है। एक बुजुर्ग़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं, “मुसीबत जब नाज़िल होती है तो बड़ी होती है फिर आहिस्ता आहिस्ता छोटी होती जाती है।” इस का वाक़ेई बहुत सों को तजरिबा होगा म-सलन जब कोई टेन्शन आता है तो इन्सान दम बख़ुद रह जाता और नींद उड़ जाती है फिर आहिस्ता आहिस्ता अ़दी हो जाता है। इस को इस मिसाल से समझने को कोशिश कीजिये म-सलन कोई मज़े से T.V. देख रहा हो कि यकायक उस की आंखों के चराग़ गुल हो जाएं। यक़ीनन वोह रो रो कर आस्मान सर पर उठा लेगा। जब कि जो पहले से नाबीना होता है वोह हंसी मज़ाक़ सब कुछ कर रहा होता है। क्यूं ? इस लिये कि इस के लिये नाबीना होना पुरानी बात हो चुकी है ! इस से ज़ियादा वाज़ेह मिसाल जिस से सब को वासिता पड़ता है वोह येह है कि घर में मय्यित हो जाए तो रोना धोना मच जाता है और फिर धीरे धीरे सब ग़म ग़लत हो जाते और रफ़ता रफ़ता खूशियों, शादियों, धमा चौकड़ियों का सिल्सिला अज़ सरे नौ शुरुअ हो जाता है।

अगर यूं करता तो यूं होता !

हज़रते अबू हुरैरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ बयान करते हैं कि सरकारे मदीनए मुनव्वरा, सरदारे मक्कए मुकर्रमा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इर्शाद फ़रमाया, “ताक़तवर मो'मिन कमज़ोर मो'मिन

से बेहतर और अल्लाह ﷻ को ज़ियादा महबूब है और दोनों में भलाई है जो काम तुम्हें नफ़अ दे उस की हिर्स करो, अल्लाह की मदद चाहो और थक कर न बैठो और अगर तुम्हें कोई नुक़सान पहुंच जाए तो येह मत कहो कि “अगर मैं इस तरह करता तो येह हो जाता” बल्कि यूं कहो قَدَّرَ اللهُ وَمَا شَاءَ فَعَلَ अल्लाह तअ़ाला की तक्दीर है और उस ने जो चाहा किया क्यूं कि لَوْ (या'नी अगर) का लफ़ज़ शैतान का काम शुरू कर देता है ।

(सहीह मुस्लिम, स-फ़हा:1432, रक़मुल हदीस:2663, दारे इब्ने हज़्म, बैरूत)

ऐसा क्यूं हुवा ?

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद رَضِيَ اللهُ عَنْهُ फ़रमाया करते, मैं अपनी ज़बान पर अंगारा रखने को इस से बेहतर समझता हूं कि मैं किसी चीज़ के बारे में येह कहूं कि “ऐसा क्यूं हुवा ?”

ऐ मुक़द्दर की रूठी हवाओं सुनो ! हाले दिल पर न यूं मुस्कराओ सुनो
आंधियो ! गर्दिशो तुम भी आओ सुनो ! मुस्तरफ़ा मेरे हामी व ग़मख़वार हैं

इन्तिहाई नाजुक मुआमला

तंगदस्ती, बीमारी, परेशानी और फ़ौतगी के मवाक़ेअ़ पर सदमे या इश्तिअ़ाल के सबब बा'ज़ लोग نَعُوذُ بِاللّٰهِ عَزَّوَجَلَّ कलिमाते कुफ़्र बक देते हैं । याद रखिये ! अल्लाह ﷻ पर ए'तेराज़ करना उस को ज़ालिम या ज़रूरतमन्द या मोहताज या अज़िज़ समझना या केहना येह सब कुफ़्रिय्यात हैं और येह भी याद रहे ! बिला इकराहे शर-ई होशो हवास के अ़ालम में सरीह कुफ़्र बकने वाला और हां में हां मिलाने वाला बल्कि ताईद में सर हिलाने वाला भी काफ़िर हो जाता है । शादीशुदा था तो उस का निकाह टूट जाता, किसी का मुरीद था तो बैअ़त ख़त्म हो जाती और ज़िन्दगी भर के नेक आ'माल बरबाद हो जाते हैं, अगर हज़ कर लिया था तो वोह भी गया, अब बा'दे तज्दीदे ईमान या'नी नए सिरे से मुसल्मान होने के बा'द साहिबे इस्तिताअ़त होने पर नए सिरे से हज़ फ़र्ज़ होगा । लगे हाथों परेशानियों के मवाक़ेअ़ पर उ़मूमन बके जाने वाले कुफ़्रिय्यात की मिसालें पेश करने की कोशिश करता हूं ।

“या अल्लाह ईमान बचा ले” के सोलह हुरूफ़ की निस्बत से कलिमाते

कुफ़्र की 16 मिसालें

(1) जो कहे, “हमेशा सब कुछ अल्लाह पर छोड़ कर भी देख लिया कुछ नहीं होता” येह कुफ़्र है । (2) जिस शख़्स ने मुसीबतें पहुंचने पर कहा, ऐ अल्लाह तूने माल ले लिया, फ़ुलां चीज़ ले ली, अब क्या करेगा ? या अब क्या चाहता है ? या अब क्या बाक़ी रह गया ? येह क़ौल कुफ़्र है । (बहारे शरीअ़त, हिस्सा:9, स-फ़हा:172, मक्तबए र-ज़विय्या बाबुल मदीना कराची) (3) जो कहे, “अगर अल्लाह तअ़ाला ने मेरी बीमारी के बा वुजूद मुझे

अज़ाब दिया तो उस ने मुझ पर जुल्म किया।” यह केहने वाला काफ़िर है। (अल बहुराईक, जिल्द:5, स-फ़हा:209, कोइटा) (4) जो कहे, “अल्लाह ने मजबूरों को और परेशान किया है।” यह कुफ़्र है। (5) जो कहे, “ऐ अल्लाह! ﷻ मुझे रिज़क दे और मुझ पर तंगदस्ती डाल कर जुल्म न कर।” ऐसा शख़्स काफ़िर है। (फ़तावा आलमगीरी, जिल्द:2, स-फ़हा:260, कोइटा) (6) तंगदस्ती की वजह से कुफ़ार के यहां नौकरी की खातिर या बिला उज़े शर-ई सियासी पनाह लेने के लिये वीज़ाफ़ार्म पर या किसी तरह की रक़म वगैरा की बचत के लिये दरख़्वास्त पर अगर खुद को झूटमूट ईसाई, यहूदी, क़ादियानी, या किसी भी काफ़िर व मुरतद् गुरोह का फ़र्द लिखा या लिखवाया तो काफ़िर हो गया। (7) किसी से माली मदद की दरख़्वास्त करते हुए केहना या लिखना कि अगर आप ने काम न किया तो मैं क़ादियानी या ईसाई बन जाऊंगा। ऐसा केहने वाला फ़ौरन काफ़िर हो गया। यहां तक कि बिल्फ़र्ज अगर कोई कहे कि मैं 100 साल के बा'द काफ़िर हो जाऊंगा वोह अभी से काफ़िर हो गया। (8) जो कहे, जब अल्लाह तआला ने मुझे दुन्या में कुछ नहीं दिया तो आख़िर पैदा ही क्यूं किया! यह क़ौल कुफ़्र है। (आलमगीरी, जिल्द:2, स-फ़हा:262, कोइटा) (9) किसी मिस्कीन ने अपनी **मोहताजी** को देख कर यह कहा, “या अल्लाह ﷻ फुलां भी तेरा बन्दा है, इसे तू ने कितनी ने'मतें दे रखी हैं और एक मैं भी तेरा बन्दा हूं मुझे किस क़दर रंजो तकलीफ़ देता है! आख़िर यह क्या इन्साफ़ है?” ऐसा केहना कुफ़्र है। (बहारे शरीअत, हिस्सा:9, स-फ़हा:170, मक्तबए र-जविय्या कराची) (10) “काफ़िरों और मालदारों को रहते और नादारों पर आफ़तें! बस जी अल्लाह तआला के घर का तो सारा निज़ाम ही उल्टा है।” ऐसा केहना कुफ़्र है। (11) किसी की मौत हो गई इस पर दूसरे शख़्स ने कहा, “अल्लाह तआला को ऐसा नहीं करना चाहिये था।” यह भी कुफ़्रिय्या कलिमा है। (12) किसी का बेटा फ़ौत हो गया, उस ने कहा, अल्लाह तआला को इस की ज़रूरत पड़ी होगी यह क़ौल कुफ़्र है क्यूं कि केहने वाले ने अल्लाह तआला को **मोहताज** क़रार दिया। (फ़तावा बज़ाज़िया, जिल्द:6, स-फ़हा:349) (13) किसी की मौत पर आ़म तौर पर लोग बक देते हैं, अल्लाह ﷻ को न जाने इस की क्या ज़रूरत पड़ गई जो जल्दी बुला लिया या केहते हैं, अल्लाह ﷻ को भी नेक लोगों की ज़रूरत पड़ती है इस लिये जल्द उठा लेता है। (येह सुन कर बात समझने के बा वुजूद भी उमूमन लोग हां में हां मिलाते या ताईद में सर हिलाते हैं। केहने वाले के साथ साथ इन सब पर भी हुक्मे कुफ़्र है।) (14) किसी की मौत पर कहा, या अल्लाह! ﷻ इस के छोटे छोटे बच्चों पर भी तुझे तर्स न आया! ऐसा केहने वाला

काफ़िर हो गया। (15) जवान मौत पर कहा, या अल्लाह! عَزَّوَجَلَّ इस की भरी जवानी पर ही रहूँ किया होता! अगर लेना ही था तो फुलां बुड़े या बुढ़िया को ले लेता। येह केहना कुफ़्र है। (16) या अल्लाह! عَزَّوَجَلَّ आख़िर इस की ऐसी क्या ज़रूरत पड़ गई कि अभी से वापस बुला लिया। ऐसा केहने वाला काफ़िर हो गया।

मज़ीद तफ़्सीलात के लिये **मक्त-बतुल मदीना** से सिर्फ़ एक रूपिया हदिय्या पर रिसाला, “28 कलिमाते कुफ़्र मअ तज्दीदे ईमान व निकाह का तरीका” हासिल फ़रमा कर ज़रूर मुतालाआ फ़रमाइये। اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ शबे बराअत की आमद आमद है लिहाज़ा 15 शा’बानुल मुअज़्ज़म की निस्बत से 1500 या 115 या कम अज़ कम 15 ख़रीद कर तक्सीम फ़रमा दीजिये। क़ाबिले ए’तेमाद अख़बार फ़रोश को दे दीजिये वोह अख़बार के साथ اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ घर घर पहुंचा देगा। उस को समझा दीजियेगा कि अख़बार फेंकने के बजाए हाथों में दे या रख दिया करे कि उमूमन हर अख़बार में अल्लाह और उस के प्यारे रसूल عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का मुबारक नाम और मज़हबी मज़ामीन शामिल होते हैं। शादी कार्ड वगैरा में भी एक एक रिसाला डाला जा सकता है। अगर किसी ने कुफ़्रिय्यात बके होंगे और आप का दिया हुआ रिसाला पढ़ कर उस ने तौबा कर ली तो اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ आप का भी बेड़ा पार हो जाएगा। मुझे हिन्द के एक इस्लामी भाई ने फ़ोन पर बताया, कि ख़वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के उर्स शरीफ़ में अजमेर शरीफ़ की तरफ़ जाते और आते ट्रेन में हिन्दी में तर्जमा किया हुआ रिसाला “28 कलिमाते कुफ़्र” ख़ूब तक्सीम किया। इस को पढ़ कर सेंकड़ों अफ़राद ने तौबा करने की सआदत हासिल की। कलिमाते कुफ़्र की तफ़्सीली मा’लूमात हासिल करने के लिये **मक्त-बतुल मदीना** से “ईमान की हिफ़ाज़त” नामी किताब 20 रूपिये हदिय्ये पर हासिल कर के पढ़िये इस में 500 से ज़ाइद कलिमाते कुफ़्र की मिसालें पेश की गई हैं।

गुम्बदे ख़ज़रा की ठन्डी ठन्डी छांव में मेरा

खातिमा बिल ख़ैर हो बहरे नबी ﷺ परवर्द गार ﷺ

ग़म सहने का ज़ेहन बना लीजिये

मुसीबत पर **सब्र** के लिये खुद को तैयार करने का एक तरीका येह भी है कि बड़ी बड़ी मुसीबतों का पहले ही से तसव्वुर कर के **सब्र** का अज़म कर लिया जाए। म-सलन येह तसव्वुर कर लिया जाए कि अगर घर में मेरे जीते जी किसी की फ़ौतगी हो गई तो اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ मैं **सब्र** करूंगा, अगर नौकरी चली गई या इन्टरव्यू में फ़ेल हो गया या मेरे अन्दर कोई मुस्तक़िल जिस्मानी ऐब पैदा हो गया म-सलन लंगड़ा, काना या अन्धा हो गया या किसी ने झाड़ दिया, दिल आज़ारी कर दी तो **सब्र** कर के अज़्र हासिल करूंगा। अगर वाक़ेई मुसीबत आ भी जाए तो फिर अपने अज़मे **सब्र** पर क़ाइम रहा

जाए । हमारे बुजुर्गाने दीन رَحْمَتُهُمُ اللهُ تَعَالَى फ़रमाया करते, “जिस को **सुब्र** न आए वोह तकल्लुफ़न **सुब्र** इख़्तियार करे, इस लिये कि हृदीसे पाक में है, “जो तकल्लुफ़न **सुब्र** इख़्तियार करेगा, अल्लाह तअ़ाला उस को **सुब्र** अता फ़रमाएगा ।” चुनान्चे **सुब्र** के हुसूल के लिये उस के फ़ज़ाइल और बे सब्री के दुन्यवी व उख़वी नुक़सानात के बारे में ग़ौर किया जाए, अपने आप को इबादात में मशगूल रखा जाए, इस तरह करने से भी मुस़ीबत की तरफ़ से ان شاء الله عَوْضَلٌ तवज्जोह हट जाएगी और **सुब्र** करना आसान होगा । बा’ज हुकमा का कौल है, “तीन चीज़ों में ग़ौर न कर (1) अपनी मुफ़िलसी व तंगदस्ती (और मुस़ीबत) पर, इस लिये कि इस में ग़ौर करते रहने से तेरे ग़म (और टेन्शन) में इज़ाफ़ा और हिर्स में ज़ियादती होगी । (2) तेरे ऊपर जुल्म करने वाले के जुल्म पर ग़ौर न कर कि इस से तेरे दिल में कीना बढ़ेगा और गुस्सा बाक़ी रहेगा । (3) दुन्या में ज़ियादा देर ज़िन्दा रहने के बारे में न सोच कि इस तरह तू माल जम्अ करने में अपनी उम्र ज़ाएअ कर देगा और अमल के मुआमले में टालम टोल से काम लेगा ।” लिहाज़ा हमें चाहिये कि दुन्यवी तफ़क्कुरात पर जान ख़पाने के बजाए आख़िरत के मुआमलात में इस तरह मुन्हमिक हो जाएं जैसा कि हमारे अस्लाफ़ رَحْمَتُهُمُ اللهُ تَعَالَى का म-दनी अन्दाज़ था ।

क्या हाल है ?

हज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ النَّعْمَ से किसी ने पूछा, क्या हाल है ? फ़रमाया, उस शख़्स का क्या हाल होगा जो एक घर (या’नी दुन्या) से दूसरे घर (या’नी आख़िरत) की तरफ़ जाने की फ़िक्र में लगा हुवा हो और येह न जानता हो कि जन्नत में जाना है या दोज़ख़ ठिकाना है ।”

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आपने ! हमारे अस्लाफ़ رَحْمَتُهُمُ اللهُ تَعَالَى को सिर्फ़ आख़िरत की धुन होती थी उन का दस्तूर था कि कैसी ही फ़ाक़ा मस्ती और तंगदस्ती होती वोह ज़रा बराबर इस की परवाह न करते क्यूंकि इन नुफूसे कुदसिय्या का ज़ेहन बना हुवा होता था कि दुन्या की तकालीफ़ में तो जूं तूं कर के गुज़ारा हो ही जाएगा लेकिन क़ब्रों आख़िरत में अगर तकालीफ़ का सामना हुवा तो बुरी तरह फंस जाएंगे । इस से हमारे वोह इस्लामी भाई भी इब्रत हासिल करें जो दुन्या में तंगदस्ती के लिये तो फ़िक्रमन्द होते हैं मगर आख़िरत की मुश्किलात से नजात की तरफ़ कोई तवज्जोह नहीं होती ! हालांकि दुन्यवी तंगदस्ती जिस से येह परेशान हैं आख़िरत में इस के लिये छुटकारे का सामान है ।

मसाइब व आलाम पर **सुब्र** का ज़ेहन बनाने के लिये ख़ूब **म-दनी क़ाफ़िलों** में सफ़र की सअ़ादत हासिल कीजिये । तरगीब के लिये म-दनी क़ाफ़िलों की एक बहार मुलाहज़ा फ़रमाइये । चुनान्चे

जोशीला मुबल्लिग

आशिकाने रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का एक **म-दनी क़ाफ़िला** जहलम (पंजाब) के एक गांव में 12 दिन के लिये सुन्नतों की तरबियत की खातिर पहुंचा। जिस मस्जिद में कियाम था, उस के सामने वाले घर में रहने वाले एक नौ जवान पर एक आशिके रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने **इन्फ़रादी कोशिश** करते हुए म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र की तरगीब दिलाई वोह नौ जवान सिर्फ़ 2 दिन साथ रहने के लिये तैयार हुए और म-दनी क़ाफ़िले वालों के साथ सुन्नतें सीखने सिखाने में मस्रूफ़ हो गए। सिर्फ़ दो^२ दिन म-दनी क़ाफ़िले में गुज़ारने की ब-र-कत से अपने घर में सब को नमाज़ों की तल्क़ीन की। चूंकि घर के बा असुर फ़र्द थे, اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ तक़्रीबन सभी ने नमाज़ पढ़ना शुरू कर दी। बराबर में मामूं के घर जा कर भी **नेकी की दा'वत** पेश की। घर वालों को T.V. की तबाहकारियां बता कर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के अज़ाब से डराया। اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ बाहमी रिज़ामन्दी से घर से T.V. निकाल दिया गया। दूसरे दिन सुब्ह कपड़ों पर इस्तरी करते हुए अचानक उन्हें करन्ट लगा और बकौल घरवालों के ज़बान पर لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ مُحَمَّدٌ رَّسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ जारी हुवा और फ़ौरन दम निकल गया। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मर्हूम की मग़ि़रत फ़रमाए। मर्हूम खुश नसीब था कि मरते वक़्त कलिमा नसीब हो गया। नबिय्ये रहमत, शफ़ीए उम्मत, मालिके जन्नत, महबूबे रब्बुल इज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने जन्नत निशान है, जिस का आख़िरी कलाम لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ (या'नी कलिमाए तय्यिबा) हो वोह दाख़िले जन्नत होगा।

(अबू दावूद, जिल्द:3, स-फ़हः255, रक़मुल हदीस:3116)

**कोई आया पाके चला गया कोई उम्र भर भी न पा सका
मेरे मौला तुझ से गिला नहीं यह तो अपना अपना नसीब है**

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

تُوبُوا إِلَى اللَّهِ ! اَسْتَغْفِرُ اللَّهَ

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! तंगदस्ती व इफ़लास वगैरा से बद्दिल हो कर खुदकुशी की राह इख़्तियार करना खुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! सख़्त ग़लती है। अल्लाह तअ़ाला की रिज़ा जूई और आख़िरत की बेहतरी के लिये खुशदिली के साथ इन तकालीफ़ व मस़ाइब पर स़ब्र करना चाहिये और अगर करनी ही है तो खुदकुशी नहीं “नफ़सकुशी” करनी चाहिये। आह ! शैतान मर्दूद ने हमारी नफ़सानी ख़्वाहिशात को उभार कर हमें कैसी कैसी बुराइयों में मुब्तला कर रखा है ! काश ! हम “नफ़सकुशी” या'नी नफ़स को मारने में ऐसे मस्रूफ़ हो जाएं

कि इस हदीसे पाक, “مُوتُوا قَبْلَ أَنْ تَمُوتُوا” या'नी मर जाओ मरने से पहले ।” (कश्फुल खिफ़ा हर्फे मीम, जिल्द:2, स-फ़हा:265, रक़मुल हदीस:2668, मत्बूआ दारुल कुतुबिल इल्मिया, बैरूत) का मिस्दाक़ बन जाएं और दौलत की फ़रावानियों और गुर्बत की परेशानियों से बे नियाज़ हो जाएं । यक़ीन मानिये मालदार के मुक़ाबले में ग़रीब व नादार फ़ाइदे में है चुनान्चे

आह ! बेचारे मालदार !!

इमामुल अन्सारे वल मुहाजिरीन, **सय्यिदुल फुक़राए वल मसाकीन**, जनाबे **रहमतुल्लिल आलमीन** صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने दिल नशीन है, “बरोजे क़ियामत फुक़रा मालदारों से 500 साल पहले जन्नत में दाख़िल होंगे । अलख़”

(सुननुत्तिरमिज़ी, जिल्द:4, रक़मुल हदीस:2365, मत्बूआ दारुल फ़िक्क बैरूत)

एक रिवायत में है, फ़रमाया, अल्लाह तआला बाल बच्चों वाले ग़रीब और सुवाल से बचने वाले मुसल्मान से बहुत **महब्बत** फ़रमाता है ।

(सुनने इब्ने माजा, जिल्द:4, स-फ़हा:432, रक़मुल हदीस:4121, मत्बूआ दारुल मा'रिफ़ा, बैरूत)

महब्बत में अपनी गुमा या इलाही ﷺ

न पाऊं मैं अपना पता या इलाही ﷺ

खुदकुशी का एक सबब इश्के मजाज़ी

आए दिन अख़बारात में येह ख़बरें शाएअ़ होती हैं कि फुलां या फुलाना ने अपनी पसन्द की शादी में घर वालों की रुकावट के सबब मायूस हो कर खुदकुशी कर ली । **नुमूनतन** “रोज़नामा नवाए वक्त” (कराची 4 अगस्त सिने 2004 इस्वी) की दो^थ ख़बरें मुलाहज़ा फ़रमाइये (1) पसन्द की शादी न होने पर एक नौ जवान ने ज़हर पी लिया (2) **महब्बत** में ना कामी पर दादू (सिन्ध) के नौ जवान ने खुदकुशी कर ली । इस तरह की अम्वात भी बड़ी हसरतनाक होती हैं । उर्यानी व फ़ह़ाशी मख़्लूत ता'लीम बे पर्दगी फ़िल्म बीनी नोविलों और अख़बारात के इश्क़िया व फ़िस्क़िया आर्टिकल्ज़ का मुतालआ वग़ैरा इश्के मजाज़ी के अस्बाब हैं । ला शुऊरी की उम्र में एक साथ खेलने वाले बच्चे और बच्चियां भी बचपन की दोस्ती की वजह से इस में मुब्तला हो सकते हैं । वालेदैन अगर शुरुअ़ ही से अपने बच्चों को दूसरों की बच्चियों और मुन्नियों को दूसरों के मुन्नो के साथ खेलने से बाज़ रखने में कामियाब हो जाएं और बयानकर्दा दीगर अस्बाब से बचाने की भी सअूय करें तो इश्के मजाज़ी से काफ़ी हद तक छुटकारा मिल सकता है । बच्चों को बचपन ही से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के प्यारे हबीब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की **महब्बत** का दर्स देना चाहिये । अगर किसी के दिल में हक़ीक़ी मा'नों में **महब्बते** रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ जांगूज़ी हो गई तो **إِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ** इश्के मजाज़ी से महफूज़ हो जाएंगे ।

महब्बत गैर की दिल से निकालो या रसूलल्लाह

मुझे अपना ही दीवाना बना लो या रसूलल्लाह

खुदकुशी का एक सबब बे रूजगारी

बे रूजगारी या कर्जदारी से तंग आ कर भी बा'ज लोग खुदकुशी की राह लेते हैं। आसाइशों, उम्दा गिज़ाओं, शादियों वगैरा के मौक़ों पर फुजूल खर्चियों, घर के अन्दर की सजावटों, गाड़ियों वगैरा के लिये ज़ियादा से ज़ियादा रक़म की त़लब और बहुत बड़ा सरमायादार बन जाने के सुनहरे ख़्वाब भी इस के अस्बाब हैं, अगर रहने सहने, खाने पीने वगैरा में हकीकी सादगी अपनाने का म-दनी ज़ेहन बन जाए तो क़लील आमदनी पर गुज़ारा करना आसान हो जाए और इस सबब से शायद कोई भी मुसल्मान खुदकुशी जैसा हराम और जहन्नम में ले जाने वाला काम न करे। दर अस्ल इल्मे दीन से दूरी की वजह से ऐसा हो रहा है। आपने कभी नहीं सुना होगा कि फुलां अ़लमि या पेश इमाम साहिब ने खुदकुशी कर ली ! हालांकि हज़राते उ-लमाए किराम की अक्सरिख्यत क़लील आमदनी पर गुज़ारा करती है।

दौलत की फ़रावानी है मांगना नादानी

आक़ा ﷺ की महब्बत ही दर अस्ल ख़ज़ीना है

सब की रोज़ी अल्लाह ﷻ के ज़िम्मे करम पर है

काश ! रूजगार के मुआमले में हमारा अल्लाह ﷻ पर हकीकी मा'नों में तवक्कुल या'नी (भरोसा) काइम हो जाए। वोही च्यूंटी को कन और हाथी को मन अता फ़रमाने वाला है, हर जानदार की रोज़ी उसी के ज़िम्मे करम पर है। चुनान्वे बारहवें पारे की इब्तिदा में इशादे बारी ﷻ है,

وَمَا مِنْ دَابَّةٍ فِي الْأَرْضِ **तर्जमए कन्जुल ईमान:** और ज़मीन पर चलने वाला कोई ऐसा **إِلَّا عَلَى اللَّهِ رِزْقُهَا** नहीं जिस का रिज़क़ अल्लाह (ﷻ) के ज़िम्मे करम पर न हो।

(पारह:12, हूद 6)

परिन्दों की रोज़ी की मिसाल

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ग़ौर त़लब बात येह है कि अल्लाह ﷻ ने हर एक की रोज़ी तो अपने ज़िम्मे करम पर ली है मगर हर एक की मग़िफ़रत का ज़िम्मा नहीं लिया। वोह मुसल्मान किस क़दर नादान है जो रिज़क़ की कसूरत के लिये तो मारा मारा फिरे मगर मग़िफ़रत की त़लब में दिल न जलाए। हदीस शरीफ़ में है “अगर तुम अल्लाह तआला पर ऐसा तवक्कुल करो जैसा की उस पर

तवक्कुल करने का हक है तो वोह ﷺ तुम्हें इस तरह रिज़क अता फ़रमाएगा जिस तरह परिन्दों को रिज़क अता फ़रमाता है कि वोह सुब्ह ख़ाली पेट जाते हैं और शाम को पेट भर कर पलटते हैं ।”

(सुननुत्तिरमिज़ी, जिल्द:4, स-फ़हा:154, रक़मुल हदीस:2351, मत्बूआ दारुल फ़िक्क बैरूत)

मालो दौलत न दे कोई सरवत न दे चाहे इज़्ज़त न दे कोई शोहरत न दे
बल्कि दुन्या की कोई मुसरत न दे तुझ से अत्तार तेरा तलबगार है
खुदकुशी का एक सबब घरेलू शकर रन्जियां

खुदकुशी का एक बहुत बड़ा सबब घरेलू ना चाकियां भी हैं । चुनान्चे “रोज़नामा नवाए वक़्त” (5 अगस्त सिने 2004 इस्वी) की ख़बर है, “एक नौ जवान ने रौहड़ी थाने की हुदूद में घरेलू मसाइल से तंग आ कर खुदकुशी कर ली ।” आह ! शैतान मर्दूद ने सरकारे मदीना ﷺ की सुन्नतों से दूर कर के हमारे घरों का सुकून बरबाद कर दिया है, हमारा निज़ामे जिन्दगी बिगड़ कर रह गया है । घरेलू जिन्दगी की इस्लामी व अख़्लाकी कदरें पामाल हो गई । इल्मे दीन से दूरी और सुन्नत के मुताबिक़ अख़्लाकी तरबियत न होने की नुहूसत के बाइस घर के तमाम अफ़राद एक दूसरे से नफ़रत करने लगे हैं, लिहाज़ा घरेलू झगड़ों से तंग आ कर कभी बीवी खुदकुशी कर देती है तो कभी शौहर । कभी बेटी खुदकुशी कर देती है तो कभी बेटा यूं ही कभी मां तो कभी बाप । घरेलू मसाइल का एक हल घरों के अन्दर **मक्त-बतुल मदीना** की तरफ़ से जारी कर्दा म-दनी मुज़ाकरह या सुन्नतों भरे बयान का एक केसेट रोज़ाना सुनना और **फ़ैज़ाने सुन्नत** का घर में रोज़ाना दर्स जारी करना और अपने घर में **दा'वते इस्लामी** का म-दनी माहौल क़ाइम करना भी है । जिस घर का हर फ़र्द नमाज़ी और सुन्नतों का अ़ादी होगा ऐसे दाढ़ी, जुल्फ़ों और इमामा शरीफ़ सजाने वाले अ़ाशिक़ाने रसूल ﷺ के पर्दा नशीन घरानों से **ان شاء الله عزوجل** आप को कभी भी खुदकुशी की मन्हूस ख़बर सुनने को नहीं मिलेगी । येह आफ़त बे नमाज़ियों, फ़ैशन परस्तों, फ़िल्में डिरामे देखने वालों, गाने बाजे सुनने वालों सिर्फ़ दुन्यवी ता'लीम को सब कुछ समझने वालों और बे अ़मली की जिन्दगी गुज़ारने वालों का हिस्सा है । खुदा ﷺ की क़सम ! मुझे खुदकुशी करने वाले हर मुसल्मान से हमदर्दी है, लोग शायद उन से नफ़रत करते हों मगर मुझे उन पर शफ़क़त है, जभी तो **“खुदकुशी का इलाज”** के उन्वान पर बयान कर रहा हूं, यकीन मानिये अगर हर मुसल्मान दा'वते इस्लामी वाला बन जाए तो अल्लाह और उस के प्यारे हबीब **عزوجل وصلى الله تعالى عليه وآله وسلم** के फ़ज़लो करम से मुसल्मानों से खुदकुशी की नुहूसत का जड़ से ख़ातिमा हो जाए ।

दा'वते इस्लामी की क़य्यूम ﷺ
इस पे फ़िदा हो बच्चा बच्चा

सारे जहां में मच जाए धूम
या अल्लाह ! ﷻ मेरी झोली भर दे

कुफ़ार की जहन्नम में छलांग

याद रहे कि अब भी मुसलमानों के मुक़ाबले में कुफ़ार में खुदकुशी का रुज़्हान कई गुना ज़ा़इद है। हत्ता कि इस फ़े'ल में मदद के लिये वहां बा क़ा़इदा तहरीकें क़ा़इम हैं। मेरी नाक़िस मा'लूमात के मुताबिक़ उन के यहां ऐसी म्यूज़िकल गज़लें भी हैं जो अहमक़ काफ़िरों को खुदकुशी पर बरअंगेख़ता कर के जहन्नम में छलांग लगवा देती हैं ! येह लोग दुन्यवी मुआमलात में लाख तरक्की कर लें मगर यकीन मानें सब के सब कुफ़ार बे वुकूफ़ों के सरदार हैं, खुदा عزّوجلّ की क़सम ! अक़्लमन्द वोही हैं जिन की अक़्ल ने दामने मुस्तफ़ा صلی الله تعالی علیه وآله وسلم थाम कर **खुदाए अहकमुल हाकिमीन** جلّ جلاله की बारगाहे आली में सरे नियाज़ झुका दिया।

दामने मुस्तफ़ा ﷺ से जो लिपटा यगाना हो गया

जिस के हज़ूर ﷺ हो गए उस का ज़माना हो गया

खुदकुशी का अहम्म सबब मायूसी

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! खुदकुशी का सब से अहम्म सबब ज़ेहनी दबाव या'नी टेन्शन और मायूसी या'नी DEPRESSION है जिस की वजह से दिमाग़ मफ़लूज हो जाता और म-दनी ज़ेहन न होने के बाइस बा'ज़ अवक़ात आदमी खुदकुशी का अज़्म कर लेता है, वोह शैतान के बहकावे में आ कर समझ बैठता है कि मुझे इस से सुकून मिलेगा मगर इस तरह वोह ख़ौफ़नाक बे सुकूनी का सामान कर गुज़रता है।

खु शियां न दो न दो मुझे दुन्या की राहतें

ग़म में तुम्हारे ﷺ काश ! रहुं बे क़रार मैं

वुजू और रोज़े के हैरत अंगेज़ फ़वाइद

ज़ेहनी दबाव या'नी टेन्शन और मायूसी का एक रूहानी इलाज वुजू और रोज़ा भी है, कुफ़ार भी इस हकीक़त को तस्लीम करने लगे हैं, चुनान्चे एक काफ़िर डॉक्टर ने अपने मक़ाले में येह हैरत अंगेज़ इन्किशाफ़ किया कि मैं ने डिप्रेशन या'नी मायूसी के चन्द मरीज़ों के रोज़ाना पांच बार मुंह धुलाए कुछ अरसे बा'द उन की बीमारी कम हो गई। फिर ऐसे ही मरीज़ों के दूसरे ग्रूप से रोज़ाना पांच बार हाथ, मुंह धुलवाए तो म-रज़ में बहुत इफ़ाक़ा हो गया। येही डॉक्टर अपने मक़ाले के आख़िर में ए'तिराफ़ करता है, मुसलमानों में मायूसी का म-रज़ कम पाया जाता है क्यूं कि वोह

दिन में कई मरतबा हाथ मुंह और पांव धोते या'नी वुजू करते हैं।" एक इंग्रेज़ माहिरे नफ़िसयात सेगमन्ड फ़ाइड SIGMEND FRIDE ने रोज़ों के फ़वाइद का ए'तिराफ़ करते हुए बयान दिया है, रोज़े से जिस्मानी खिचाव, ज़ेहनी डिप्रेसन और नफ़िसयाती अम्राज़ का ख़ातिमा होता है।

इमामा बांधना मायूसी का इलाज है

सरकारे मदीना صلى الله تعالى عليه وآله وسلم की मुबारक सुन्नतों पर अमल ख़ास तौर पर **मुस्तक़िलन** इमामा शरीफ़ पहनना भी ज़ेहनी दबाव से नजात पाने और अपने अन्दर हिल्मो कुव्वते बरदाश्त पैदा करने का बेहतरीन तरीक़ा है। चुनान्चे हदीस शरीफ़ में है "इमामा बांधो तुम्हारा हिल्म बढ़ेगा।" (या'नी कुव्वते बुर्दबारी में इज़ाफ़ा होगा)

(अल मुस्तदरक लिल हाकिम, जिल्द:5, स-फ़हः:272, रक़मुल हदीस:7488, मत्बूआ दारुल मा'रिफ़ा, बैरूत)

इमामा और साइन्स

जदीद साइन्सी तहक़ीक़ के मुताबिक़ मुस्तक़िल तौर पर इमामा शरीफ़ सजाने वाला खुशनसीब मुसल्मान खून की वजह से जनम लेने वाली बा'ज़ बीमारियों और फ़ालिज से महफूज़ रहता है। क्यूंकि इमामा शरीफ़ सजाने की ब-र-कत से दिमाग़ की तरफ़ जाने वाली खून की बड़ी बड़ी नालियों में खून का दबाव सिर्फ़ ज़रूरत की हद तक रहता है और ग़ैर ज़रूरी खून दिमाग़ तक नहीं पहुंच पाता! लिहाज़ा अमरिका में फ़ालिज के इलाज के लिये "इमामा नुमा मोक़स" बनाया गया है।

उन का दीवाना इमामा और जुल्फ़ो रीश में

वाह देखो तो सही लगता है कितना शानदार

सांस की वर्जिश

टेन्शन और डिप्रेसन कम करने के लिये **अमले तनफ़ुस** या'नी सांस की वर्जिश मुफ़ीद है। इस के लिये फ़ज़्र का वक़्त बेहतर होता है कि उस वक़्त उमूमन धुवां और शोरोगुल नहीं होता। येह अमल किसी हवादार कम रौशनी वाले कमरे में कीजिये। इस्लामी भाई बरआमदे से इतनी दूर हों कि किसी के घर में नज़र न पड़े और इस्लामी बहनें भी इस क़दर दूर खड़ी हों कि कोई ग़ैर मर्द उन को न देख सके नीज़ उन की भी किसी ग़ैर मर्द पर नज़र न पड़े। इस का तरीक़ा निहायत आसान है, पहले अपनी उंगली नाक के उल्टे नथने पर (या'नी सूराख़ के क़रीब) रख कर मा'मूली सा दबाएं और नाक की सीधी जानिब से सांस लें अब सीधी तरफ़ से दबाएं और उल्टी जानिब से सांस निकाल दें। इस तरह कम अज़ कम 30 बार येह अमल दोहराएं। अगर इस से ज़ाइद भी कर लें तो कोई ह-रज नहीं। इस से ان شاء الله عزوجل आप टेन्शन में कमी और काफ़ी फ़रहत महसूस करेंगे।

परेशानी की तरफ़ से तवज्जोह हटा दीजिये

एक तरीक़ाए इलाज येह भी है कि अपनी परेशानी के मुतअल्लिक़ सोचना तर्क कर दीजिये । अगर सोचते रहेंगे कि मैं बहुत बीमार हूं, मैं परेशान हूं, मैं सरापा मसाइल हूं तो इस से परेशानी और ज़ेहनी दबाव में मज़ीद इज़ाफ़ा होगा और आप अन्दर ही अन्दर घुलते चले जाएंगे । हज़रते सय्यिदुना **अमीरुल मुअ्मिनीन** अलिय्युल मुर्तज़ा, शेरे खुदा كَرَّمَ اللهُ تَعَالَىٰ وَجْهَهُ الْكَرِيمَ फ़रमाते हैं, मैं ने सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالَىٰ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को फ़रमाते सुना “**مَنْ كَثُرَ هَمُّهُ سَقَمَ بَدَنُهُ**” या'नी जिस की फ़िक्रें ज़ियादा हो जाती हैं उस का बदन सकीम (या'नी बीमार) हो जाता है ।”

(शुउबुल ईमान, जिल्द:6, स-फ़हा:342, रक़मुल हदीस:8439, मत्बूआ दारुल कुतुबिल इल्मिय्या, बैरूत)

**दिल को सुकूँ चमन मौं है न लालाज़ार में
सोज़ो गुदाज़ तो है फ़क़त कूए यार ﷺ में
सब्ज़ गुम्बद के तसव्वुर का तरीक़ा**

चलिये ! अपने ज़ेहन को ताज़ा बल्कि ताज़ातरीन करने के लिये तीसरा म-दनी तरीक़ा भी सुन लीजिये और वोह येह है कि किसी भी वक़्त कम रौशन, हवादार और पुर सुकून जगह पर लेट कर बेहतरीन पुर फ़ज़ा मक़ाम का तसव्वुर काइम कीजिये और येह तसव्वुर हक़ीक़त से क़रीबतर हो । **मदीनाए मुनव्वरा** وَأَدَاهَا اللهُ شَرَفًا وَتَعْظِيمًا में वाक़ेअ गुम्बदे ख़ज़रा का हसीन मन्ज़र मरहबा ! कि येह दुन्या के हर हसीन मन्ज़र से हसीन तरीन है । गुम्बदे ख़ज़रा का तसव्वुर बांधिये । **मक्त-बतुल मदीना** से “**तसव्वुरे मदीना**” का केसेट हदिय्यतन हासिल कर के उस के ज़रीए बेहतर तरीक़े पर “तसव्वुरे मदीना” काइम किया जा सकता है ।

**क्या सब्ज़ सब्ज़ गुम्बद का खूब है नज़ारा
है किस क़दर सुहाना कैसा है प्यार प्यारा
येह रहा सब्ज़ गुम्बद !**

आप ने बारहा तस्वीर में सब्ज़ सब्ज़ गुम्बद देखा होगा और जिस खुश किस्मत ने हक़ीक़त में देखा है उस के लिये तसव्वुर करना मज़ीद आसान होगा । शुरुअ में हल्का हल्का अक्स महसूस होगा फिर उस को हक़ीक़त से क़रीब तर करने की कोशिश कीजिये । अगर ज़ब्बए सादिक़ हुवा तो إِنَّ شَاءَ اللهُ غَوَّضَ आप बे साख़्ता पुकार उठेंगे, **येह रहा सब्ज़ गुम्बद !** फिर ख़याल कीजिये सुब्ह का सुहाना वक़्त है, ठन्डी ठन्डी हवा झूमती हुई, सब्ज़ सब्ज़ गुम्बद को चूमती हुई, उस के गिर्द घूमती हुई मुझे ब-र-कतें दे रही है, मुझे छू रही है, और उस के सबब मुझे पुर कैफ़ ठन्डक महसूस हो

रही है, फिर येह भी तसव्वुर कीजिये कि सब्ज गुम्बद शरीफ़ पर, हल्की हल्की बूदाबांदा निछावर हो रही है और वहां से ब-र-कतें लिये बारीक बारीक बुन्दकियां मुझ पर भी पड़ रही हैं। कुछ देर के लिये इस दिल फ़रेब व दिल गुदाज मन्ज़र में खो जाइये।

**दरे मुस्तफ़ा ﷺ की तलाश थी मैं पहुंच गया हूं खयाल में
न थकन का चेहरे पे है असुर न सफ़र की पांव में धूल है**

हो सके तो हर रोज़ इसी तरह तसव्वुर कीजिये उन की रहमत से क्या बईद कि सचमुच पर्दे उठ जाएं और आशिक़ाने मुस्तफ़ा ﷺ हकीकत में गुम्बदे ख़ज़रा के जल्वे देख लें। रोज़ाना कम अज़ कम सात मिनट ऐसा करेंगे तो إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ आप का ज़ेहनी दबाव या'नी टेन्शन बहुत कम हो जाएगा अगर यकीन नहीं आता तो तज़िबा कर लीजिये।

**गुम्बदे ख़ज़रा खुदा ﷻ तुझ को सलामत रखे
देख लेते हैं तुझे प्यास बुझा लेते हैं**

पैदल चलने के फ़वाइद

ज़ेहनी दबाव और आ'साबी खिचाव कम करने के लिये ज़ेहनी वर्ज़िश के इलावा रोज़ाना 30 मिनट बल्कि एक घन्टा तक मुसल्लसल पैदल चलना चाहिये। दुरूद शरीफ़ पढ़ते जाइये और लगातार चलते जाइये। चलने में येह कोशिश फ़रमाइये कि पांव के पन्जों पर क़दरे वज़न पड़ता रहे। चलने के लिये फ़ज़्र का वक़्त बेहतर है। उस वक़्त माहौल उमूमन गाड़ियों के धूएं से पाक, फ़ज़ा में निखार और हवा खुशगवार होती है। रिवायत के मुताबिक़ जन्नत में हर वक़्त इसी वक़्त का सा समां होगा। إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ आप का हाज़िमा दुरुस्त होगा, आप के आ'ज़ा बेहतर तौर पर काम करेंगे, दौराने खून तेज़ होगा और खून की गर्दिश तेज़ होने से जिस्म से एक ख़ास किस्म का ज़हरीला मादा ख़ारिज होता है, जिस की ख़ासियत अफ़यून से मिलती जुलती है। उस के ख़ारिज न होने से मुख़तलिफ़ दर्दों और तकालीफ़ में इज़ाफ़ा होता रहता है। अगर मुसल्लसल पैदल चलने वाली वर्ज़िश किया करेंगे तो येह ज़हरीला मादा जिस्म से ख़ारिज होता रहेगा जिस से मुख़तलिफ़ जिस्मानी तकालीफ़ से राहतें मिलेंगी, ज़ेहनी दबाव या'नी टेन्शन में कमी आएगी और अगर कोलेस्ट्रॉल भी ज़ाइद हुवा तो वोह भी ख़ारिज होगा और दिमाग़ को ताज़गी मुयस्सर आएगी। जब ज़ेहन तरोताज़ा रहेगा तो **खुदकुशी** का खयाल कभी भी क़रीब न आएगा। إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ

ऐ बोकसों के हमदम दुन्या के दूर हों ग़म
बस जाए दिल में का'बा सीना बने मदीना
बीमार बादशाह

कोहते हैं, दो पड़ौसी मुल्कों के बादशाहों में याराना था, इन में एक तरह तरह के अम्राज और टेन्शन से तंग जब कि दूसरा² खुशहाल और सिहहत मन्द था। एक बार बीमार बादशाह ने तन्दुरुस्त बादशाह से कहा, मैं माहिर तबीबों से इलाज करवाने के बा वुजूद हुसूले सिहहत में नाकाम हूं, आप किस तबीब से इलाज करवाते हैं ? सिहहतमन्द बादशाह ने मुस्करा कर कहा, मेरे पास दो तबीब हैं, मरीज बादशाहने कहा, बराए करम ! मुझे भी उन से मिलवा दीजिये, अगर उन्होंने ने मेरा इलाज कर दिया तो उन को मालामाल कर दूंगा। सिहहत मन्द बादशाह हंस पड़ा और केहने लगा, मेरे तबीब मेरा बिल्कुल मुफ्त इलाज करते हैं ! और वोह दो² तबीब हैं मेरे दोनों² पांव ! और तरीके इलाज येह है कि उन के साथ मैं खूब पैदल चलता हूं लिहाजा मेरी सिहहत अच्छी रहती है और आप ग़ालिबन ज़ियादा तर बैठे रहते, पैदल चलने से कतराते, और थोड़े थोड़े फ़ासिले पर भी सुवारी पर आते जाते हैं लिहाजा खुद को बीमार और ज़ेहनी दबाव का शिकार पाते हैं।

www.dawateislami.net

**कभी मिम्बर से रौजे तक कभी रौजे से मिम्बर तक
इधर जाऊं उधर जाऊं इसी हालत में मर जाऊं
शैतान के वस्वसों का रद्द कीजिये**

जब कोई बीमार, बे रूज़गार, कर्जदार, सख्त टेन्शन का शिकार या कोई गुसीला और जज़्बाती आदमी दिल बरदाश्ता, या कोई इम्तिहान में फ़ेल होने पर ता'नाज़नी से ख़ाइफ़ या पसन्द की शादी में जब नाकाम हो जाता है तो शैतान हमदर्द बन कर आता और बहकाता है कि तुम इतने परेशान हो तो आख़िर खुदकुशी क्यू नही कर लेते के इन **झंझटों** से जान छूटे। जज़्बाती मर्दी औरत की अक्ल चूँकि ऐसे मवाक़ेअ पर साथ छोड़ देती है और इस तरह वोह खुदकुशी पर कमर बस्ता हो जाते हैं। लिहाजा शैतान जब वस्वसे डाले तो ऐसी सूरत में आप बिल्कुल ठंडे दिमाग से शैतान के वस्वसों को रद्द कीजिये और खुदकुशी के दुन्यवी नुक्सानात और उख़वी अज़ाबात को ख़यालात में दोहराइये। **अव्वलन** येह फ़े'ल अल्लाह तआला और उस के प्यारे हबीब صلى الله تعالى عليه وآله وسلم को नाराज़ और अज़ीज़ो अकारिब को ग़मगीन करने वाला और हमारे दुश्मनों या'नी शयातीन और उन के मुत्तबिर्इन या'नी काफ़िरीन को राजी करने वाला है। **सानियन** इस से मसाइल हल नहीं होते बल्कि खुदकुशी करने

वाले के अज़ीज़ व अक़रिब दुखों और परेशानियों में मज़ीद घिर जाते हैं। **सालिसन** खुदकुशी से जान छुटती नहीं बल्कि मज़ीद और वोह भी शदीद फंस जाती है। तो उस शख्स के लिये किस क़दर नुक्सान और खुसरान की बात होगी जो शैतान के वस्वसों में आ कर खुदकुशी कर के अपने पाक परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ की नाराज़गी की सूरत में खुद को अज़ाबे क़ब्र व ह़श्र व नार का हक़दार बना ले। नीज़ येह कैसी बे मुर्व्वती, और बे वफ़ाई है कि ख़ानदान वालों और अज़ीज़ों के गले में बदनामी व शर्मिन्दगी का हार डाल कर दुन्या से खुस्रत हो। नीज़ खुद अपने दुश्मनों को भी खुशी फ़राहम करता चले। लिहाज़ा अगर किसी को खुदकुशी के लिये शैतान तैयार करने की नापाक कोशिश करे तो उस को चाहिये कि इस मर्दूद को बिल्कुल मायूस कर दे और ईमान पर इस्तिफ़ामत के अज़म से उस दुज़्दे रज़ीम (या'नी मर्दूद चोर) का इस तरह केह कर मुंह फेर दे कि मैं क्यूं करूं खुदकुशी? खुदकुशी करे मेरी बला, मुझे तो अपने रब عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्लो करम से बहुत उम्मीद, उम्मीद और उम्मीद है, और खुदकुशी तो वोह करे जिसे अल्लाह तअ़ाला की रहमत से मायूसी हो। الْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रहमत बहुत ज़बरदस्त है। वोह ज़रूर ज़रूर ज़रूर मेरी परेशानियां भी दूर फ़रमाएगा और मुझे गुमहगार को महज़ अपने फ़ज़्लो करम से बिला हिसाबो किताब बख़्श भी देगा। अगर बिलफ़र्ज ब जाहिर परेशानियां दूर नहीं भी होतीं तब भी मैं उस की रिज़ा पर राज़ी हूं मैं खुदकुशी कर के अपनी आख़िरत को दाव पर लगा कर हरगिज़ तुझे खुश नहीं करूंगा।

बिस्मिल्लाह के सात हुरूफ़ की निस्बत से 7 रूहानी इलाज

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! परेशानियों का तअ़ल्लुक क़ल्ब व रूह से होता है। लिहाज़ा इन से नजात पाने और सुकूने क़ल्ब बढ़ाने के लिये रूहानी इलाज भी समाअत फ़रमाइये।

(1) ग़म का इलाज

لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيمِ 60 बार रोज़ाना पढ़ कर पानी पर दम कर के पी लिया करें إِنَّ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ तमाम रंजो ग़म दूर होंगे। और दिल की घबराहट के लिये भी येह अमल मुफ़ीद है।

(2) रोज़ी में ब-र-कत का बेहतरीन नुस्खा

अगर बे रूज़गारी से तंग हैं तो इस नुस्खे पर अमल कीजिये जैसा कि हज़रते सय्यिदुना सहल बिन सअूद رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ बयान करते हैं कि एक शख्स ने हुजूरे अनवर, मदीने के ताजवर, शफ़ीए रोज़े महशर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की खिदमते बा ब-र-कत में हाज़िर हो कर अपनी मुफ़िलसी व मोहताजी की शिकायत की।

आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया, जब तुम घर में दाख़िल हुवा करो तो सलाम कर के दाख़िल हुवा करो, ख़्वाह कोई हो या न हो फिर मुझ पर सलाम अर्ज़ करो। और एक बार **قُلْ هُوَ اللهُ** शरीफ़ पढ़ो। उस शख़्स ने ऐसा ही किया फिर अल्लाह **عَزَّوَجَلَّ** ने उस को इतना मालामाल कर दिया कि उस ने अपने हमसायों और रिश्तेदारों की भी ख़िदमत की।

(तफ़सीरे कुरतुबी : सूरतुल इख़लास, जिल्द:10, स-फ़हा:183, मत्बूआ दारुल फ़िक्क बैरूत)

(3) घरेलू इत्तिफ़ाक़ का अमल

सब घरवालों में इत्तिफ़ाक़ के लिये बा'द नमाज़े जुमुआ लाहौरी नमक पर एक हज़ार एक बार या **बदूदु** पढ़ें (अव्वल आख़िर दस¹⁰ दस¹⁰ बार दुरूद शरीफ़) और उस वक़्त से उस नमक का बरतन ज़मीन पर न रखें, वोह नमक सात दिन घर की हांडी में डालें, सब खाएं, मौला तआला सब में इत्तिफ़ाक़ पैदा करेगा। हर जुमुआ को सात दिन के लिये पढ़ लिया करें।

(फ़तावा र-ज़विय्या जदीद, जिल्द:26, जदीद स-फ़हा:612)

(4) दुश्वारी के बा'द आसानी

हज़रते अल्लामा इमाम शअरानी **فَدَسَّ سُوْرَةُ الرَّبَّانِي** "तब्क़ाते कुब्रा" में हुजूर ग़ौसुल आ'ज़म **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم** का येह इर्शाद नक़ल करते हैं, इब्तिदाअन मुझ पर बहुत सख़्त्रियां रखी गईं और जब सख़्त्रियां इन्तिहा को पहुंच गईं तो मैं अज़िज़ आ कर ज़मीन पर लेट गया और मेरी ज़बान पर कुरआने पाक की येह दो² आयात जारी हो गईं।

وَإِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا ۗ إِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا ۗ **तर्जमए कन्जुल इमान:** तो बेशक दुश्वारी के साथ आसानी है, बेशक दुश्वारी के साथ आसानी है।

(पारह:30, अलम नशरह, आयत:5,6)

عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم इन आयात की ब-र-कत से वोह तमाम सख़्त्रियां मुझ से दूर हो गईं।

मुसीबत ज़दा और मरीज़ को चाहिये कि सरकारे ग़ौसे पाक **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** की उसी अदा को याद कर के बेताबाना ज़मीन पर लेट जाए और सूरए अलम नशरह की आयत नम्बर 5 और 6 पढ़ें। अल्लाह **عَزَّوَجَلَّ** चाहेगा तो ब तुफ़ैले हुजूरे ग़ौसे आ'ज़म मुश्किल आसान होगी।

मेरी मुश्किलों को तू आसान कर दे

رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ

मेरे ग़ौस का वासिता या इलाही

(5) इश्के मजाज़ी से छुटकारे का अमल

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ط لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ سُبْحَانَكَ إِنِّي كُنْتُ مِنَ الظَّالِمِينَ ط أَللَّهُ نُورُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ط لَاتَأْخُذُهُ سِنَّةٌ وَلَا نَوْمٌ ط

बा वुजू तीन³ बार पढ़ कर (अव्वल व आखिर एक बार दुरूद शरीफ़) पानी पर दम कर के पी लें येह अमल चालीस 40 दिन तक करें। नमाज़ की पाबन्दी ज़रूरी अशहद ज़रूरी है।

म-दनी फूल: अगर कोई इश्क़े मजाज़ी की आफ़त में फंस जाए तो उस को चाहिये कि सब्र करे। शादी से क़ब्ल मिलना बल्कि एक दूसरे को देखना नीज़ ख़तो किताबत, फ़ोन पर गुफ़्तुगू और तहाइफ़ का लैन दैन वगैरा हर वोह फ़े'ल जो इस इश्क़ के सबब किया जाए ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है। अपने मजाज़ी इश्क़ के लिये हज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ عَلَى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ السَّلَامُ और जुलैख़ा के क़िस्से को दलील बनाना सख़्त जहालत व ह़राम। याद रहे ! इश्क़ सिर्फ़ जुलैख़ा की तरफ़ से था, हज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ عَلَى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ السَّلَامُ का दामन इस से पाक था। हर नबी मा'सूम है।

(6) क़र्ज़ उतारने का वज़ीफ़ा

اللَّهُمَّ اكْفِنِي بِحَلَالِكَ عَنْ حَرَامِكَ وَأَغْنِنِي بِفَضْلِكَ عَمَّنْ سِوَاكَ.

ता हुसूले मुराद हर नमाज़ के बा'द 11, 11 बार और सुब्हो शाम 100,100 बार रोज़ाना (अव्वल व आखिर एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़िये। इस दुआ के बारे में हज़रते मौला मुशिकल कुशा, **अलिय्युल मुर्तज़ा**, शेरेखुदा كَرَّمَ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمَ का इशादे हकीकत बुन्याद है, “अगर तुझ पर पहाड़ जितना भी क़र्ज़ होगा तो إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ अदा हो जाएगा।”

सुब्हो शाम की ता'रीफ़ : आधी रात के बा'द से ले कर सूरज की पहली किरन चमकने तक **सुब्ह** और इब्तिदाए वक़ते ज़ोहर से गुरूबे आफ़ताब तक **शाम** केहलाती है।

(7) बराए रिज़क़ और अदाए क़र्ज़

يَا مُسَبِّبَ الْأَسْبَابِ : पांच सौ⁵⁰⁰ बार (अव्वल व आखिर एक बार दुरूद शरीफ़) येह अमल नमाज़ी इस्लामी भाई या इस्लामी बहन बा'द नमाज़े इशा नंगे सर खुले आस्मान तले खड़े खड़े पढ़े। (ऐसी जगह पर येह अमल कीजिये जहां ना महरम पर और किसी के घर के अन्दर नज़र न पड़े)

يَا بَاسِطُ : रोज़ाना बा'द नमाज़े फ़ज़्र दुआ के बा'द दस बार (अव्वल आखिर एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़ कर दोनों² हाथ मुंह पर फेल लें।

म-दनी फूल: ऐ काश ! रोज़ी में कसरत की ख़्वाहिश के बदले हम नेकियों में ब-र-कत की ख़्वाहिश करते और इस के लिये भी कोई अमल करते।

म-दनी मश्वरा: विर्द शुरुअ करने से पहले किसी सुन्नी अ़ालिम या क़ारी साहिब को सुना दीजिये।

म-दनी इल्तिजा : इसी रिसाले में दिया हुवा कोई भी विर्द करना चाहें तो शुरू करने से क़ब्ल सरकारे ग़ौसे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْاَكْرَم के ईसाले स़वाब के लिये ग्यारह या एक सौ ग्यारह रूँ की और काम हो जाने की सूरत में सरकारे आ'ला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن के ईसाले स़वाब के लिये 25 या 125 रूँ की दीनी किताबें तक्सीम कीजिये । (रक़म कमो बेश करने में मुज़ायक़ा नहीं)

www.dawateislami.net